मई 2019

दादावाणी

Retail Price ₹ 10

मनुष्यगति में आने के
बाद यदि मनुष्य स्व-स्वभाव में रहे
और विसर्जन में दखल न करे तो
मोक्ष में जाएगा ही।

वर्ष : 14 अंक : 7
अखंड क्रमांक : 163
मई 2019
Total 32 pages (including cover)

Editor : Dimple Mehta
© 2019
Dada Bhagwan Foundation.
All Rights Reserved
Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar – 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj
Dist-Gandhinagar - 382421

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधरसिटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
फोन: (079) 39830100
email: dadavani@dadabhagwan.org
www.dadabhagwan.org
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
8155007500

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
15 साल
भारत : 1500 रुपये
यू.एस.ए. : 150 डॉलर
यू.के. : 120 पाउन्ड
वार्षिक
भारत : 150 रुपये
यू.एस.ए. : 15 डॉलर
यू.के. : 12 पाउन्ड
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से
संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

दादावाणी

व्यवस्थित की समझ रखती है मुक्त दखलंदाज़ी से

संपादकीय

दादाश्री कहते हैं कि इस जीवन में हमें जो भी कुछ मिलता है वह अपने ही कर्मों का हिसाब है। पिछले जन्म के कर्मों के आधार पर इस जन्म में व्यवस्थित शक्ति फल देती है। उसमें किसी की दखलंदाज़ी नहीं है। अत: जितना पुण्य हो उतने ही अच्छे संयोग मिल जाते हैं और पाप खराब संयोग लाता है। अत: अपने ही कर्मों का फल है और वह व्यवस्थित है। उसमें भगवान का कोई दखल है ही नहीं! यू आर होल एन्ड सोल रिस्पॉन्सिबल फॉर यॉर लाइफ! (आपके जीवन के लिए आप ही संपूर्ण रूप से ज़िम्मेदार हो।)

यह 'व्यवस्थित' का ज्ञान सभी के लिए नहीं है क्योंकि जब तक अहंकार है तब तक 'व्यवस्थित' नहीं कह सकते। 'व्यवस्थित' तो आत्मा प्राप्त होने के बाद ही समझ में आता है! संसार है ही 'व्यवस्थित' उसमें दो मत नहीं हैं, लेकिन जिसमें अहंकार है, वह यदि 'व्यवस्थित' कहेगा तो बखेड़ा हो जाएगा। जहाँ अहंकार है, वहाँ प्रारब्ध होता है और अहंकार के बगैर 'व्यवस्थित' है।

यदि 'व्यवस्थित' की सत्ता को समझ ले तो खुद बिल्कुल मुक्त हो जाएगा। फिर खुद के स्वरूप में ही रह सकेगा। जो कुछ भी हो रहा है वह 'व्यवस्थित' है। यदि कोई खुद इस परसत्ता को समझ जाए और परसत्ता में दखलंदाज़ी न करे तो फिर वह सत्ता ही उसे छोड़ देती है और परिणाम स्वरूप वह मुक्त हो जाता है। खुद परसत्ता में दखल करता है, इसीलिए यह सत्ता उसे पकड़े रखती है। 'व्यवस्थित' की सत्ता में लोग दखल करते हैं। 'मैंने किया' कहते हैं, इस कर्तापन से ही परेशानी है। अत: व्यवहार में 'व्यवस्थित' के साथ एडजस्ट कर लो। पूरा व्यवहार 'व्यवस्थित' ही चला लेता है। उसमें अक्ल लड़ाने जैसा कुछ भी नहीं है। व्यवहार में यदि जागते हुए सो जाओगे तो गड़बड़ नहीं रहेगी। व्यवहार तो, 'व्यवस्थित' जिस तरह से चलाता है, वह शुद्ध व्यवहार है और उसमें 'हमारे' दखल करने से, वह अशुद्ध हो जाता है, इसलिए दखल नहीं करना चाहिए।

'व्यवस्थित' अर्थात् चंदूभाई जो भी कार्य करे, फिर चाहे वह अच्छा हो या खराब, जो कुछ भी करे, उसे देखते रहो, दखलंदाज़ी नहीं करो, तो उसे 'व्यवस्थित' कहेंगे। ज्ञान के बाद यह संसार गरबड़ रहित है। दादाश्री कहते हैं कि ज्ञान लेने से पहले तो सब जगह गरबड़ ही थी, लेकिन ज्ञान लेने के बाद यदि कुछ भी गरबड़ हो तो समझना कि 'व्यवस्थित' को समझने में आपकी भूल हो रही है। 'व्यवस्थित' को नहीं समझने की वजह से दखलंदाज़ी होती है। यदि 'व्यवस्थित' को संपूर्ण रूप से समझ जाए तो केवलज्ञान हो जाएगा।

अब तो 'हमें' 'अपना' काम निकाल लेना है। अत: 'हमें' 'व्यवस्थित' को समझ लेना है। 'व्यवस्थित' के ज्ञान को जैसा है वैसा समझकर महात्मा दखलंदाज़ी रहित दशा प्राप्त करें और उसके लिए प्रस्तुत संकलन उपयोगी हो, यही अभ्यर्थना।

- जय सच्चिदानंद

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें । ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

व्यवस्थित की समझ रखती है मुक्त दखलंदाज़ी से

नहीं किसी का दखल अपने में!

प्रश्नकर्ता : एक व्यक्ति को पैसा और दूसरे को गरीबी, वह किस तरह से मिलती है? मनुष्य योनी में ही सब ने जन्म लिया है, फिर भी?

दादाश्री : वह ऐसा है, अपना यह जो जन्म होता है न, वह इफेक्ट है। इफेक्ट अर्थात् पिछले जन्म में जो कॉज़ेज़ डाले थे, यह उनका फल है। अर्थात् जितना पुण्य होता है, उस पुण्य से क्या-क्या होता है? तब कहें, उसमें संयोग सारे अच्छे मिल जाएँ तो मदद ही करते रहते हैं। बंगला बनवाना हो तो बंगला बन जाता है, मोटर मिलती है! और पाप, खराब संयोग लाकर बंगले की नीलामी करवाता है। अत: अपने ही कर्मों का फल है। उसमें भगवान का कोई दखल है नहीं! यू आर होल एन्ड सोल रिस्पोन्सिबल फॉर यॉर लाइफ! (आप ही अपने जीवने के लिए संपूर्ण रूप से ज़िम्मेदार हो।) एक लाइफ नहीं, कितनी ही लाइफ के लिए भगवान की दखल नहीं है इसमें।

पूरण-गलन में दखल करके बिगाड़ देते हैं अगला जन्म

पैसा-वैसा क्या है? *पूरण-गलन* (चार्ज होना, डिस्चार्ज होना) है। *पूरण* (चार्ज होना) हुआ है, तो *गलन* (डिस्चार्ज होना) होगा ही। बहीखातों का हिसाब है। उसमें लोग बुद्धि लगाकर गड़बड़ कर देते हैं। ये तो *पूरण-गलन* में शक्तियाँ बरबाद करते हैं। पैसा तो बैंक (पुण्य का) बैलेन्स है, हिसाब है, निश्चित ही है। उसमें, पैसा कमाने में जो बुद्धि लगाते हैं, वे अपना ध्यान बिगाड़ते हैं और अगला जन्म बिगाड़ देते हैं।

हिसाब के अनुसार बँटवारा, उसमें दखल क्या?

इंसान को कमाने की बहुत जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। कमाई करने में आलस करना चाहिए। जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए क्योंकि 1978 में कमाने में बहुत जल्दबाज़ी करे तो 1988 में आपके पास जो धन आना था, वह अभी 1978 में आ जाएगा, उद्दीरणा हो जाएगी। फिर 1988 में क्या करेंगे? इसलिए बहुत धन कमाने की खटपट नहीं करनी चाहिए। आपको व्यापार निश्चित भाव से शांति से करते रहना चाहिए। इस काल में जितनी नीतिमत्ता रखी जा सके, भावपूर्वक उतना करते रहना। हाय-हाय तो कौन करता है? जिसे अनाज या किसी चीज़ की कमी पड़ रही हो, वह हाय-हाय करता है। इस तरह से अनाज की कमी पड़े, वैसा दिन तो आपका नहीं आएगा न? कपड़ों की कमी हो जाए, क्या ऐसे दिन आते हैं?

यदि पुण्य का फल समझे तो नहीं होगी परेशानी

ये सेठ पूरी ज़िंदगी में पच्चीस लाख लेकर आए होते हैं, वह पच्चीस लाख के बाइस लाख करता है लेकिन बढ़ाता नहीं है। बढ़ेगा कब? यदि वह हमेशा ही धर्म में रहे तब। लेकिन यदि उसमें खुद की दखलंदाज़ी करने गया तो बिगड़ जाएगा। कुदरत में हाथ डालने गया कि बिगड़ जाएगा। लक्ष्मी आए, तब वह समझता है कि रेती में से लक्ष्मी आ रही है इसलिए वह रेती को घोटता रहता है, लेकिन कुछ नहीं मिलता। लक्ष्मी तो पुण्य का फल है, सिर्फ पुण्य का ही फल है। मेहनत का फल होता न, तब तो सारी लक्ष्मी मज़दूरों के हाथ में ही गई होती। और अक्ल का फल होता न, तो इन लोहे के व्यापारियों जैसा अक्ल वाला कोई नहीं है, तो सारी लक्ष्मी वहाँ पर गई होती लेकिन ऐसा नहीं है। लक्ष्मी तो पुण्य का फल है।

एक सेठ ने मुझसे कहा, 'मेरे इन बेटों से कुछ कहिए न, मेहनत नहीं करनी है, आराम से भोगते हैं।' मैंने कहा, 'कुछ कहने जैसा है ही नहीं। वे अपने खुद के हिस्से का पुण्य भोग रहे हैं, उसमें हम क्यों दखल करें?' तब उसने मुझसे कहा कि, 'उन्हें समझदार नहीं बनाएँ?' मैंने कहा कि, 'दुनिया में जो भोगता है, वह समझदार कहलाता है, जो बाहर डाल दे वह पागल कहलाता है और जो मेहनत करता रहे, वह तो मज़दूर कहलाता है।' लेकिन जो मेहनत करता है, उसे अहंकार का रस मिलता है न! लंबा कोट पहनकर जाता है इसलिए लोग 'सेठ आए, सेठ आए' करते हैं, बस इतना ही। भोगने वाले को ऐसी कुछ सेठ-वेठ की नहीं पड़ी होती। हम तो जितना अपना भोगें बस उतना ही सच्चा है।

जीवन निर्वाह के लिए कितना चाहिए? तू एक बार निश्चित कर ले कि इतनी-इतनी मेरी आवश्यकताएँ हैं। उदाहरणार्थ, घर में खाना-पीना पर्याप्त होना चाहिए, रहने के लिए घर चाहिए, घर चलाने के लिए पर्याप्त मात्रा में धन चाहिए। फिर उतना तो तुझे मिल ही जाएगा। लेकिन यदि पड़ोसी के बैंक में दस हज़ार जमा हों, तो तुझे अंदर चुभता रहता है। इससे तो दुःख पैदा होते हैं। तू खुद ही दुःख को न्यौता देता है। संसार में सभी सुख की खोज में हैं लेकिन सुख की परिभाषा ही तय नहीं करते। 'सुख ऐसा होना चाहिए कि उसके बाद कभी भी दुःख नहीं आए।'

पैसा गिनना भी दखल

इस लौकिक सुख के बजाय अलौकिक सुख होना चाहिए, जिस सुख में हमें तृप्ति मिले। ये लौकिक सुख तो *अजंपा* (अशांति) बढ़ाते हैं बल्कि! जिस दिन पचास हज़ार रुपये की कमाई हो जाए न, तो गिन-गिनकर ही दिमाग़ सारा खाली हो जाएगा। दिमाग़ तो इतना अधिक अधीरता वाला हो जाएगा कि खाना-पीना अच्छा नहीं लगेगा। मेरे पास भी पैसा आता था, वह सब मैंने देखा है कि दिमाग़ कैसा हो जाता था तब! इनमें से कुछ भी मेरे अनुभव से बाहर का नहीं है न! मैं तो इस समुद्र में से तैरकर बाहर निकला हूँ, इसलिए मैं सब जानता हूँ कि आपको क्या होता होगा? अधिक रुपये आएँ, तब अधिक अकुलाहट होती है, दिमाग़ डल हो जाता है और कुछ याद नहीं रहता, *अजंपा* ही *अजंपा* रहा करता है। ये तो नोट गिनते ही रहते हैं लेकिन वे सभी नोट यहीं के यहीं रह गए और गिनने वाले चले गए! नोट कहते हैं कि, 'तुझे समझना हो तो समझ लेना, 'हम रहेंगे और तू जाएगा!' इसलिए हमें ज़रा सावधान हो जाना

चाहिए न! और कुछ नहीं, हमें उनके साथ कोई बैर नहीं बाँधना है। पैसे से हम कहें, 'आओ भाई।' उसकी ज़रूरत है! सभी की ज़रूरत तो है न? लेकिन उसके पीछे ही तन्मयाकार रहे! तो गिनने वाले गए और पैसे रह गए, फिर भी गिनना पड़ता है। वह भी चारा ही नहीं न! शायद ही कोई सेठ ऐसा होगा कि मुनीम जी से कहे कि, 'भाई, मुझे खाते समय परेशान मत करना, आप आराम से पैसे गिनकर तिजोरी में रखना और तिजोरी में से ले लेना।' उसमें दखल नहीं करे ऐसा शायद ही कोई सेठ होगा! हिन्दुस्तान में ऐसे दो-पाँच सेठ होंगे जो निर्लेप रहें! वे मेरे जैसे!! मैं कभी भी पैसे नहीं गिनता था!! यह क्या झंझट! इन लक्ष्मी जी को आज मैंने बीस-बीस सालों से हाथ में नहीं पकड़ा, तभी इतना आनंद रहता है न!

चंचल होने से हो जाता है दखल

जब तक व्यवहार है तब तक लक्ष्मी जी की भी ज़रूरत है, उसकी मनाही नहीं है लेकिन उसमें तन्मयाकार नहीं होना चाहिए। तन्मयाकार तो नारायण में होना। सिर्फ लक्ष्मी जी के पीछे पड़ेंगे तो नारायण चिढ़ जाएँगे। लक्ष्मीनारायण का तो मंदिर है न! लक्ष्मी जी क्या कोई ऐसी-वैसी चीज़ है?

लक्ष्मी जी तो देवी हैं। व्यवहार में भगवान की पत्नी कहलाती हैं। यह सब तो पद्धति के अनुसार 'व्यवस्थित' है लेकिन भीतर चल-विचल होने से गड़बड़ खड़ी होती है। भीतर चल-विचल नहीं होगा, तब लक्ष्मी जी बढ़ेंगी। यह भीतर चल-विचल नहीं हो तो ऐसा नहीं होता कि, 'क्या होगा? क्या होगा?' ऐसा हुआ कि लक्ष्मी जी चलती बनेंगी।

यदि व्यवस्थित की सत्ता समझ जाए तो नहीं रहेगा दखल

पैसे कमाए, उसे जगत् *पूरण* कहता है और नुकसान जाए या खर्च हो जाए, तब *गलन* हो गया, कहते हैं। वास्तव में कमाया या खर्च किया दोनों *गलन* हैं और फिर 'व्यवस्थित' के अधीन है। अब यह जगत् को किस तरह समझ में आए? यदि 'व्यवस्थित' की सत्ता समझ जाए तो खुद बिल्कुल मुक्त हो जाए। फिर खुद के स्वरूप में ही रह सकेगा। इतनी बात आप जान लो, तब फिर आपको परेशानी नहीं रहेगी न? आप यह बात भूलोगे नहीं। जगत् के लोगों को सिखाते रहें, फिर भी भूल जाएँगे क्योंकि वे कषाय सहित है। कषाय सहित वाले के काबू में कुछ भी नहीं रहता।

अहंकार करता है दखल उदय कर्म में

प्रश्नकर्ता : यह बात महात्माओं के लिए नहीं है लेकिन अब संसार में तो सभी कर्माधीन ही हैं न?

दादाश्री : कर्माधीन हैं, सभी।

प्रश्नकर्ता : और कम्प्लीट (संपूर्ण रूप से) कर्माधीन ही चलता है न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। सिर्फ एक जन्म के लिए कर्माधीन है।

प्रश्नकर्ता : अब, क्या उसमें खुद कुछ नया कर सकता है?

दादाश्री : नहीं, उसमें यदि कुछ नया करे तो उसके अनुसार अगले जन्म में बदलाव होगा। उसमें तो खुद स्वतंत्र है लेकिन ये उदय कर्म एक जन्म के लिए हैं। उसमें अहंकार दखल करता है लेकिन उससे नया बदलाव नहीं ला सकता।

जब तक अहंकार है तब तक दखलंदाज़ी करता ही रहता है

प्रश्नकर्ता : जीवन में जो कुछ भी हो रहा है, वह क्या पिछले कर्मों के हिसाब से हो रहा है?

दादाश्री : हाँ। वर्ना और क्या? और यदि नया हिसाब नहीं बाँधें तो कोई हर्ज ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पिछले कर्मों के अनुसार वह खराब काम करता आया हो और यदि अभी उसे अच्छे कर्म करने हों तो क्या वैसा हो सकता है? अभी पिछले कर्मों के हिसाब से जो कुछ चल रहा है, क्या उसमें कुछ बदलाव ला सकते हैं?

दादाश्री : अहंकार है न, इसलिए थोड़ा-बहुत बदलाव होता है। जो डिज़ाइन बन चुकी है, उसमें बदलाव नहीं हो सकता। और जिनमें अहंकार नहीं है उनमें कुछ भी बदलाव नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : सब कुछ व्यवस्थित है, कर्मों का परिणाम है, तो हम जिस भाव से करते हैं उसी अनुसार आता है लेकिन क्या भावना करने में पुरुषार्थ है? पुरुषार्थ से भावना बदल सकती है या वह भी व्यवस्थित है?

दादाश्री : नहीं, वह व्यवस्थित नहीं है। भावना से तू पुरुषार्थ कर। व्यवस्थित कब तक हेल्प करता है? तभी तक जब तक अहंकार नहीं है। जब तक अहंकार है तब तक व्यवस्थित नहीं कह सकते। अत: अहंकार से अव्यवस्थित करता है, इसलिए भावना से उसे बदल सकता है। संसार है व्यवस्थित, लेकिन जो अहंकार है वह दखल किए बगैर नहीं रहता। यदि दखल नहीं करे तो बिल्कुल व्यवस्थित है, एक्ज़ेक्ट है! अहंकार कुछ न कुछ दखलंदाज़ी करता ही रहता है। न हो वहाँ से दु:ख ले आता है।

जहाँ पर अहंकार का दखल, वहाँ पर नहीं है व्यवस्थित

प्रश्नकर्ता : जब तक अहंकार है तब तक तो संसार अव्यवस्थित ही है?

दादाश्री : संसार है व्यवस्थित, लेकिन अहंकार अर्थात् उल्टा किए बगैर नहीं रह सकता। व्यवस्थित को अव्यवस्थित कर देता है!

प्रश्नकर्ता : कोई भी कार्य हुआ तो वह व्यवस्थित नहीं कहा जाएगा?

दादाश्री : क्या व्यवस्थित ऐसा होता है? अहंकारी और व्यवस्थित दोनों का बैर है। वे दोनों एक साथ नहीं हो सकते। व्यवस्थित निर्‌अहंकारी के लिए है। अहंकार तो व्यवस्थित के बाप को भी तोड़ दे! अत: जब तक अहंकार है तब तक उसे व्यवस्थित नहीं कह सकते। व्यवस्थित तो डिस्चार्ज कर्मों के लिए ही है। चार्ज कर्मों में व्यवस्थित नहीं है। वह कब क्या कर ले, कह नहीं सकते। अत: उसमें व्यवस्थित है ही नहीं। पूरा दखल होता है अहंकार का, सहज रूप से ही!

कर्तापना से करता है दखल

प्रश्नकर्ता : यदि यह संसार व्यवस्थित है, तो फिर लोगों को कर्मबंधन कैसे होता है?

दादाश्री : अहंकार है इसीलिए कर्मबंधन हुए बगैर नहीं रह सकता। यदि अहंकार नहीं हो, तो संसार व्यवस्थित है। वह अहंकार यदि खत्म हो जाए न, तो संसार व्यवस्थित ही है। यदि अहंकार से नहीं करे तो इसे ज्यों का त्यों समझ सकता है। अब, अहंकार क्यों करता है? क्योंकि खुद करता नहीं है और कहता क्या है कि, 'मैंने ऐसा किया और वैसा किया।' लेकिन नाटकीय रूप से बोलना चाहिए। भगवान कर्ता नहीं हैं और आप

भी कर्ता नहीं हो, जो करता है उसे बंधन होगा। अत: करती है दूसरी शक्ति, वह व्यवस्थित शक्ति है। बाकी, मुख्य तो साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स है। इस तरह यह सब विज्ञान से हुआ है। करता है कोई और आप मानते हो कि 'यह मैं कर रहा हूँ' बस इतना ही, इसी को अहंकार कहते हैं। यह अहंकार चला जाए तो सब व्यवस्थित है। जब तक अहंकार है तब तक दखल किए बगैर नहीं रहता। दखल तो, 'ऐसा करूँ और वैसा करूँ,' यों गड़बड़ करता है, लेकिन उससे कुछ होता नहीं है बल्कि अगला जन्म बिगाड़ देता है!

जब तक कर्तापन का दखल है तब तक अव्यवस्थित है

अहंकारी के लिए भी संसार है तो व्यवस्थित, लेकिन अहंकारी व्यवस्थित को व्यवस्थित नहीं रहने देते, उल्टा कर देते हैं। इसलिए हमने इन सभी का अहंकार लेने के बाद, व्यवस्थित बताया, अर्थात् कर्तापना छूटने के बाद। अंहाकरी तो उल्टा ही करता रहता है, दिन-रात उसका काम ही वह है न! जो सीधा हो उसे उल्टा कर देता है। क्योंकि उसमें विपरीत बुद्धि है न! सभी में सम्यक् बुद्धि थोड़ी न होती है? कलियुग के हिसाब से विपरीत बुद्धि होती है। उसका काम ही उल्टा करना है।

यह तो सिर्फ इतना ही है कि खाते-पीते हैं बाकी भान ही नहीं है। यदि भान होता तो फिर खुद के घर में चार बेटियाँ होने के बाद किसी की बेटी को खराब दृष्टि से देखता ही नहीं। उसे ऐसा विचार आना चाहिए कि, 'मेरी बेटियों को कोई देखे तो क्या होगा? लेकिन इन लोगों को तो भान ही नहीं है, भान क्यों नहीं है? क्योंकि, समझता नहीं है और बेहिसाब अहंकार है! अहंकार अर्थात् अंधा ही। यदि लोभ का अहंकार हो तो लोभ में अंध रहता है। मान का अहंकार हो तो मान में अंध रहता है। विषय का हो तो विषय में अंध होता है। यानी मूलत: अहंकार पूरी तरह से अंधा ही है न, इसलिए उसे जिसमें भी डाले, उसमें अंधा ही रहता है। फिर वह उल्टा ही करता रहता है।

वह बुद्धि की आँख से देखता है। अत: सारा बुद्धि का ही वर्चस्व है। बुद्धि का काम क्या है? फायदा-नुकसान दिखाते रहना, बस। वह दिन भर खून ही जलाती रहती है। अत: यदि तू अहंकारी है तो तू ही कर्ता है और यदि तू निर्अहंकारी है तो व्यवस्थित कर्ता है।

जब तक अहंकार कर्ता है तब तक व्यवस्थित नहीं हो सकता। कर्ता दखल किए बगैर रहता ही नहीं। व्यवस्थित विसर्जन शक्ति है, सर्जन नहीं। विसर्जन में कोई परेशानी नहीं है, सर्जन से परेशानी है। चार्ज करने वाले को परेशानी है। अहंकारी लोग चार्ज करते हैं न? समय ही नहीं लगता। लेकिन संसार के लोगों के लिए व्यवस्थित नहीं है। ज्ञान लेने के बाद ही 'व्यवस्थित' है। आपके लिए अब सिर्फ विसर्जन ही बचा है इसलिए आपके लिए व्यवस्थित है। जबकि अन्य लोगों के लिए सर्जन व विसर्जन दोनों ही हैं।

यदि अहंकारी 'व्यवस्थित' कहे तो दखल

यह 'व्यवस्थित' का ज्ञान सभी लोगों के लिए नहीं है क्योंकि उनके पास अहंकार है न! अब अहंकार 'व्यवस्थित' के ताबे में है और वह खुद कहता है कि 'मैं कर रहा हूँ,' इसलिए उन दोनों में वहाँ पर टकराव होता है। 'व्यवस्थित' में भी दखल करके बल्कि सुख बिगाड़ता है। वह अहंकार से यदि इतना दखल नहीं करे और समता से यदि पुरुषार्थ करे, तो बहुत फायदेमंद रहेगा।

फिर भी 'उससे' वह ऐसा तो मान ही नहीं पाएगा कि 'व्यवस्थित' है। 'व्यवस्थित' तो शुद्ध होने के बाद, 'आत्मा' प्राप्ति के बाद ही समझ में आता है! जगत् है ही 'व्यवस्थित' उसमें दो मत नहीं हैं, लेकिन जो अहंकार है, वह यदि 'व्यवस्थित' कहे तो दखल हो जाता है।

यह ज्ञान उनके लिए है जिन्हें आत्मदशा प्राप्त हो चुकी है। दूसरा कोई ऐसा नहीं कह सकता क्योंकि जब साठ प्रतिशत तक के ज्ञानी बनते हैं तब उनमें चालीस प्रतिशत अहंकार बाकी रहता है। इसलिए तब तक व्यवस्थित नहीं कह सकते। अहंकार दखल किए बगैर रह नहीं सकता। कहता है 'मुझे करना बाकी है'। उन्हें करना बाकी है जबकि 'यहाँ' कुछ भी नहीं करना है। 'व्यवस्थित' तो, अहंकार खत्म होने के बाद ही व्यवस्थित कहा जा सकता है। हम इन सभी का अहंकार बंद करने के बाद ही व्यवस्थित देते हैं।

अहंकार का दखल जाने के बाद क्रमबद्ध पर्याय

जब तक अहंकार है तब तक वह सभी बदलाव ला सकता है, दखल किए बगैर रहता ही नहीं। ज्ञान मिलने पर अहंकार खत्म हो गया अत: आप कहते थे न, उसे क्या कहते हैं?

प्रश्नकर्ता : क्रमबद्ध पर्याय।

दादाश्री : हम 'व्यवस्थित' कहते हैं और वे 'क्रमबद्ध पर्याय' कहते हैं, वह सब अहंकार खत्म होने के बाद का है। ज्ञान नहीं हो, तब कुछ भी नहीं कहा जा सकता क्योंकि अहंकार कभी भी बम फोड़ सकता है।

जब तक अहंकार है तब तक क्रमबद्ध पर्याय कहा ही नहीं जा सकता। उसका दखल है। फिर उससे बखेड़ा हो जाता है। मकान चालीस साल पुराना हो जाए, फिर रंग रोगन करके उसे नया बना देता है। हर एक चीज़ क्रमबद्ध पर्याय में ही होती है। स्थावर-जंगम (स्थिर-चलायमान) दोनों ही। अत: तत्व और अवस्था, सिर्फ ये दो ही क्रमबद्ध पर्याय में होते हैं। कौन-सा तत्व नहीं? तो कहते हैं, 'भ्रांत चेतन!'

प्रश्नकर्ता : वह क्रमबद्ध नहीं है?

दादाश्री : हाँ, देहाध्यास! देहाध्यास कह सकते हो लेकिन वह क्रमबद्ध नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वह क्या है दादा, समझ में नहीं आया। वह ज़रा समझाइए।

दादाश्री : जब तक देहाध्यास है तब तक अहंकार ऐसा भी (उल्टा भी) कर सकता है और वैसा भी (सीधा भी) कर सकता है। अहंकार रहित होने के बाद वह क्रमबद्ध पर्याय में आता है।

प्रारब्धवादी करता है दखल अहंकार से

प्रश्नकर्ता : प्रारब्ध और व्यवस्थित दोनों नज़दीकी शब्द हैं या दोनों में अंतर है?

दादाश्री : नहीं, बहुत अंतर है।

प्रश्नकर्ता : क्या अंतर है?

दादाश्री : व्यवस्थित में कोई बदलाव नहीं हो सकता है। जबकि प्रारब्धवादी तो कैसा होता है? उसमें जीवित अहंकार होता है। वह दखल किए बगैर नहीं रह पाता। जबकि यह अहंकार जीवित नहीं है इसलिए इसे एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित कहा है और व्यवस्थित के आधार पर ही प्रारब्ध है लेकिन प्रारब्ध तो दखल वाला होता है। उसे व्यवस्थित नहीं कह सकते। इस ज्ञान की प्राप्ति

के बाद अपना यह व्यवस्थित है! यदि बाहर के लोग इसे पकड़ेंगे तो मूर्ख बन जाएँगे क्योंकि उनमें दखल है और अपने यहाँ तो चारों तरफ के संयोग देख लेंगे। जाने जैसा नहीं लग रहा है तो छोड़ो। वे लोग तो दखल करते हैं न? बखेड़ा किए बगैर रहेंगे ही नहीं।

जहाँ अहंकार है वहाँ प्रारब्ध है और अहंकार के बगैर व्यवस्थित है। व्यवस्थित अर्थात् एक्ज़ेक्ट! अहंकार के दखल से प्रारब्ध बदलता रहता है। अहंकार जीवित है न! यहाँ पर अहंकार नहीं है तो व्यवस्थित है, एक्ज़ेक्ट टु एक्ज़ेक्ट।

दखल होता है कर्ताभाव से

प्रश्नकर्ता : तो क्या प्रारब्ध में अहंकार जीवित है और जहाँ व्यवस्थित है वहाँ पर वह मृत है, ऐसा कहेंगे?

दादाश्री : प्रारब्ध में अहंकार जीवित है। जबकि मृत अहंकार वाले का तो मोक्ष होता है। व्यवस्थित तो 'एक्ज़ेक्टनेस' है। जबकि प्रारब्ध में तो वहाँ पर दखल करने वाला अहंकार रहता है। वहाँ तरह-तरह की झंझट हो जाती है। व्यवस्थित 'एक्ज़ेक्टनेस' है। उसमें कोई चेन्ज नहीं कर सकता।

बाहर प्रारब्ध ही कहेंगे, बाहर व्यवस्थित नहीं कह सकते। अपने यहाँ पर जो प्रारब्ध है न, उसमें नई दखलंदाज़ी बंद हो गई है इसलिए अब, सिर्फ व्यवस्थित ही रहता है जबकि प्रारब्ध दखलंदाज़ी वाला होता है।

प्रारब्ध का मतलब क्या है? भोक्ताभाव से कर्म भोगना और साथ ही कर्ताभाव से नए कर्म बाँधना। कर्ताभाव और भोक्ताभाव, प्रारब्ध में दोनों ही उत्पन्न होते हैं। अब, उसमें कर्ताभाव से नया दखल होता है जबकि भोक्ताभाव दखल रहित है। अब, अपने यहाँ ज्ञान के बाद कर्ताभाव खत्म हो गया है अत: सिर्फ, भोक्ताभाव ही बचा। उसे हमने व्यवस्थित कहा है।

भ्रांति जाने के बाद जाए दखल

इस ज्ञान के बाद 'हमारे लिए' 'प्रारब्ध व पुरुषार्थ' नहीं रहते। आप आत्मस्वरूप हो गए इसलिए बिल्कुल 'व्यवस्थित' ही है। जगत् के लोगों के लिए जगत् 'व्यवस्थित' नहीं है क्योंकि वह खुद भ्रांतिस्वरूप में है इसलिए वह दखल किए बगैर रहता नहीं है। अभी यदि चाय देर से आए तो आप समझ जाते हो कि 'व्यवस्थित' है और समभाव से *निकाल* (निपटारा) करके हल कर लेते हो, लेकिन दखल नहीं करते जबकि वह क्या करेगा?

प्रश्नकर्ता : शोर मचा देगा।

दादाश्री : हम तो पुरुष बने हैं इसलिए पुरुषार्थ है। परंतु जगत् के लोगों की भूमिका पुरुषार्थ रहित नहीं होती है न! वह भ्रांत पुरुषार्थ कहलाता है, वह भी पुरुषार्थ है। पर उसे भी जानना चाहिए न? भ्रांत पुरुषार्थ से क्रमिक मार्ग में आगे बढ़ते हैं, मोक्ष की ओर। अब जगत् के लोग कहेंगे कि, 'यह दुकान खूब आगे बढ़ाई, व्यापार खूब जमाया, मैं पढ़ा, मैं पहले नंबर से पास होता हूँ।' उसे ही पुरुषार्थ कहते हैं, लेकिन वह सब प्रारब्ध है। भूल सुधारनी पड़ेगी या नहीं सुधारनी पड़ेगी?

प्रश्नकर्ता : सुधारनी पड़ेगी।

दादाश्री : आप नहीं सुधारो तो चलेगा क्योंकि आपको तो 'व्यवस्थित' हाथ में आ गया है न! पर लोग तो कब समझेंगे यह?

लौकिक ज्ञान करवाता है दखल

'व्यवस्थित' के ज्ञान के सामने सारे लौकिक ज्ञान चले जाते हैं। तो फिर बचा क्या? पूरे संसार को लौकिक ज्ञान ही परेशान कर रहा है, साधु-महारज सभी को। सिर्फ, इतना ही फर्क है कि उनके पीछे कोई रोने वाला नहीं है और उन्हें किसी के लिए नहीं रोना है। वे सभी व्यवहार से छूट चुके हैं।

फिर भी जहाँ जाए वहाँ यही दखल है। कल यदि शिष्य लोटा गुमाकर आ गया, तो आज ले जाने से पहले उसे कहेंगे, 'देखना, संभालकर ले जाना, हं, यदि अब तोड़कर लाया तो तुझे घुसने नहीं दूँगा।' तब शिष्य कहता है, 'महाराज, संभालना या नहीं संभालना क्या मेरे हाथ में हैं?' तब वे कहेंगे, 'देख फिर। ऐसा कह रहा है? तेरे हाथ में नहीं तो किस के हाथ में हैं? क्या भगवान के हाथ में हैं?' अरे! यदि शिष्य पागल हो न, फिर भी लोटा नहीं तोड़ेगा। हम उसे कहें कि 'तोड़ दे न इसे!' तब कहेगा, 'ऐसे तोड़ा जाता होगा क्या?' तो फिर उसे क्यों सावधान करते रहते हो? बल्कि दुविधा में पड़ जाएगा! जिसे टोकना नहीं है उसे टोकेंगे तो क्या होगा?

पूर्व कर्म अर्थात् अहंकार करके प्रवाह में दखल

प्रश्नकर्ता : अब पूर्व कर्म और नियति ये दोनों क्या हैं? वे दोनों एक ही हैं या अलग-अलग हैं?

दादाश्री : अलग-अलग हैं इसीलिए तो भगवान ने अलग-अलग लिखा है न! अलग हैं इसलिए अलग लिखा है।

प्रश्नकर्ता : तो अब आप नियति और पूर्व कर्म के बारे में समझाइए। ये दोनों अलग क्यों हैं?

दादाश्री : नियति कुदरती प्रवाह है। सभी जीव निरंतर प्रवाह में ही हैं। वे परिवर्तनशील होते ही रहते हैं। जबकि पूर्व कर्म, अर्थात् खुद ने अहंकार करके दखल दी है। प्रवाह में खुद अंहकार करके दखल दे तो, उसे कहते हैं पूर्व कर्म।

प्रश्नकर्ता : लेकिन इस प्रवाह से उस जीव को क्या लेना-देना है?

दादाश्री : वह जीव प्रवाह में ही है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, प्रवाह में है लेकिन हम ऐसा कहते हैं कि पूर्व कर्म उसे बाधा डालते हैं।

दादाश्री : यदि हम दखल देते हैं तभी पूर्व कर्म, बाधक हैं, यदि दखल नहीं दें तो कोई हर्ज नहीं है।

दखलंदाज़ी हुई इसलिए नियति नहीं रही

प्रश्नकर्ता : नियति अर्थात् प्रवाह। अब, यह समझाइए कि प्रवाह क्या है।

दादाश्री : गाड़ी जब चलने लगती है न, तो वह हर एक स्टेशन पर एक्ज़ेक्ट अपने टाइम पर ही पहुँचती है, ऐसा सब होता है। अतः जब मुंबई आता है तब उसे नियति कहते हैं। और दखलंदाज़ी हुई तो नियति खत्म। इसलिए ऐसा कहते हैं कि यह गाड़ी नियति वाली है।

प्रश्नकर्ता : दखलंदाज़ी करने की वह सत्ता किसकी है।

दादाश्री : अहंकार की।

प्रवाह में दखल देने की वजह से रुका हुआ है मोक्ष

प्रश्नकर्ता : अब, जो नियति है, वह जीव पर कैसे असर डालती है?

दादाश्री : वह तो काम करती ही रहती है। निरंतर प्रवाह में उस ओर ले जाती है आगे, बीच में यदि कोई दखल नहीं होता न, तो वह सीधे मोक्ष में ले जाती।

मनुष्यगति में आने के बाद यदि मनुष्य स्व-स्वभाव में रहे और विसर्जन में दखल न दे, तो मोक्ष में ही जाएगा। दखल देगा तो अन्य गति में जाएगा।

प्रश्नकर्ता : तो फिर जीव को कुछ करना चाहिए या नहीं?

दादाश्री : कुछ भी करना ही नहीं था लेकिन इस बुद्धि के उत्पन्न होने से तो अहंकार उत्पन्न होता है। यह जो अहंकार उत्पन्न होता है, वह दखल देता है। यदि बुद्धि का उपयोग न हो तो कल्याण हो जाएगा, लेकिन बुद्धि का उपयोग किए बगैर रहता नहीं है न! क्योंकि, वह तो बुद्धि है। मेरे जैसे की बुद्धि चली गई, उसके बाद कोई परेशानी नहीं आती। वह प्रवाह में आ ही गया। प्रवाह अर्थात् उदय कर्म के अधीन। प्रवाह यानी उदय कर्म के अधीन। सिर्फ उदय कर्म के अधीन ही रहे न तो, उसे कहेंगे, 'प्रवाह में है।' वह सीधा मोक्ष में जाएगा। लेकिन उदय कर्म के अधीन रहता नहीं है न, खुद उसमें छेड़छाड़ करता रहता है। वह जो प्रवाह है, वह नियति का है, यानी कि मेरी बुद्धि चली गई है तो अब मुझे मोक्ष में नहीं जाना हो तब भी जाना पड़ेगा।

प्रश्नकर्ता : तो नियति उसे ऊँचे ही ले जाती है या नीचे भी गिरा देती है?

दादाश्री : नहीं, नियति नीचे नहीं गिराती, वह तो पूरा अहंकार का दखल है। नियति तो ऊँचे ही ले जाती है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन नियति अर्थात् कर्म की निर्जरा न?

दादाश्री : नहीं। नियति तो उसे आगे ले जाती है, इतना ही। वह कर्म करवाती है और भुगतवाती है, निर्जरा भी करवाती है लेकिन यदि अपना दखल नहीं हो, तो। अपना तो पक्का दखल रहता ही है, 'मैंने कमाया', वह दखल किया। इस वर्ल्ड में क्या किसी ने भी कमाया है? इस दुनिया में किसी को भी क्या संडास जाने की शक्ति है?

प्रश्नकर्ता : तो फिर नियति ने क्या किया? उसे शक्ति दी, संडास जाने की शक्ति दी?

दादाश्री : नियति करवा रही है, आपका संडास-वंडास। आपको कुछ करने की ज़रूरत ही नहीं है। नियति ही सारा काम कर रही है। सुबह जो उठाए, वह नियति है, सुलाए, वह भी नियति है, सब कुछ नियति ही कर रही है। मनुष्य को कुछ भी करने की ज़रूरत नहीं है।

दखल टलते हैं, पूर्व कर्म के अधीन रहने से

प्रश्नकर्ता : तो ऐसा नहीं कह सकते कि पूर्व कर्म कर रहा है?

दादाश्री : पूर्व कर्म कहना तो जोखिम है। कहना नहीं है, पूर्व कर्म के अधीन रहना है आपको।

प्रश्नकर्ता : हाँ। तो वही कह रहा हूँ कि पूर्व कर्म के अधीन रहना है ऐसा तो हम समझते हैं लेकिन उसमें नियति क्या करती है?

दादाश्री : हाँ, लेकिन अधीन रहना है फिर उसमें छेड़छाड़ नहीं करो तो कोई हर्ज नहीं है। यदि पूर्व कर्म के अधीन रहे न, वे नियति में आ गए। अगर पूर्व कर्म के अधीन नहीं रहे और

दखल दी तो आप दखल में घुस गए। दखल दिए बगैर रहते नहीं है न लोग, नहीं? चाय फीकी आई तो आप क्या करोगे? पूर्व कर्म के अधीन चाय फीकी आई, रोज़ अच्छी आती है। तब आप क्या करते हो उस समय? 'अरे, क्या करती हो? तुम्हें होश नहीं है? मेरी चाय तो फीकी है!' ऐसे दखल देने से फिर वापस संसार बढ़ा!

इसलिए कृपालु देव ने कहा है कि 'जीते-जी मर जाए तो फिर मरना नहीं पड़ेगा।' वह नियति के हाथ में गया। जीते जी मर जाना चाहिए। यदि प्याले फूट जाएँ, तब भी भीतर कुछ असर नहीं होना चाहिए। जेब में से लाख रुपए चले जाएँ फिर भी उसका असर नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यदि हर एक जीव को नियति के अनुसार ही कार्य करना है तो फिर उसे और कुछ करने को रहेगा संसार में?

दादाश्री : नियति के अनुसार करे तब तो बहुत अच्छा है। अगर दखल न दे तो। लेकिन दखल दिए बगैर रहता नहीं न! अज्ञान की भ्रांति वाला है न! भ्रांति है इसलिए वह दखल देता है।

परसत्ता में दखल देने से बंधन

खुद इस परसत्ता को समझ जाए और परसत्ता में फिर खुद एकाध जन्म तक हाथ न डाले तो फिर वह सत्ता ही उसे छोड़ देती है और वह मुक्त हो जाता है, बस। खुद परसत्ता में दखलंदाज़ी करता है इसीलिए यह सत्ता उसे पकड़कर रखती है। उसकी सत्ता में लोग दखलंदाज़ी करते हैं। 'मैंने किया' कहते हैं। वास्तव में संडास जाने की शक्ति नहीं है। मैंने फॉरेन के डॉक्टरों को इकट्ठा करके कहा तब वे सब असमंजस में पड़ गए। फिर मैंने कहा, जब बंद हो जाएगा तब पता चलेगा कि आपकी शक्ति नहीं थी।

प्रश्नकर्ता : प्राकृतिक शक्ति है।

दादाश्री : हाँ बस। यह जो है, उसे कुदरत चलाती है, प्रकृति चलाती है और ऊपर से कहता है, 'मैं चला।'

कुदरत जो चला रही है, उसमें दखल क्या देना?

कुदरत के हाथ में कितनी अच्छी बाज़ी है! और एक आपके हाथ में व्यापार आया, और उसमें भी व्यापार आपके हाथ में तो है ही नहीं। आप सिर्फ मान बैठे हो कि मैं व्यापार करता हूँ, इसलिए झूठी हाय-हाय, हाय-हाय करते हो। दादर से मुंबई सेन्ट्रल टेक्सी में जाना हुआ, तब वह मन में टकरा जाएगी-टकरा जाएगी करके डर जाता है। अरे! कोई बाप भी टकराने वाला नहीं है। तू अपनी तरह से आगे देखकर चल। तेरा फर्ज़ कितना? तुझे आगे देखकर चलना है, इतना ही। वास्तव में तो वह भी तेरा फर्ज़ नहीं है। कुदरत तेरे पास से वह भी करवाती है। लेकिन आगे देखता नहीं है और दखल करता है। कुदरत तो इतनी अच्छी है! यह अंदर इतना बड़ा कारखाना चलता है तो बाहर नहीं चलेगा? बाहर तो कुछ चलाने को है ही नहीं।

लोग कमर कसकर पुरुषार्थ करने जाते हैं कि मुंबई में ऐसे करना है और वैसे करना है! मुंबई तो वही की वही रही है, कितने ही सेठ यों ही मर गए! मुंबई की आबादी है, तब तक कोई कुछ करने वाला नहीं है क्योंकि आबादी को रोकने की सत्ता नहीं है और बरबादी को भी रोकने की सत्ता नहीं है! और उसमें लोग पुरुषार्थ करने निकले हैं! यह तो मात्र अहंकार करता है, अक्कलमंदी करता है और मानता है कि खुद पुरुषार्थ कर रहा है! वह पुरुषार्थ भ्रांत भाषा का

शब्द है, यह सच्ची भाषा का शब्द नहीं है। पुरुष हुए बिना पुरुषार्थ नहीं होता। यह तो 'ज्ञानी पुरुष' अलख का *लक्ष* (जागृति) बैठाए, पुरुष हो जाए, फिर पुरुषार्थ कर सकता है।

दखल हो जाता है, पुरुषार्थ के कर्ता बनने से

यह अभी नाश्ता यहाँ पर आया है, उसे खाने में क्या पुरुषार्थ करना पड़ता है? यदि इस खाने की क्रिया में पुरुषार्थ करना पड़ता हो तो, वह और जगत् का पुरुषार्थ, दोनों समान ही हैं। क्या खाने के लिए पुरुषार्थ करना पड़ता है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : वैसा ही है। खाने के लिए नैमितिक पुरुषार्थ करना पड़ता है, हाथ, मुँह हिलाना पड़ता है। 'हम' यदि दखल नहीं करें तो दाँत अच्छी तरह चबाएँगे, जीभ भी अच्छी तरह रहेगी। यह तो खुद सिर्फ दखल ही करता है कि, 'खाने का पुरुषार्थ मैं करता हूँ।' जीभ यदि खाने का पुरुषार्थ करने जाए न, तो बत्तीस दाँतों के बीच कितनी ही बार चब जाए! लेकिन जीभ दखल नहीं करती और ऐसा नहीं कहती कै 'मैं पुरुषार्थ कर रही हूँ।' भोजन के समय यदि मिल में पुरुषार्थ(!) करने नहीं जाए, तो खाने की क्रिया बहुत अच्छी तरह, स्वाभाविक रूप से होगी ऐसा है। यह तो मात्र 'देखना' और 'जानना' है। सबकुछ स्वाभाविक रूप से चलता ही रहे, ऐसा है! रात को आप हाँडवा (गुजराती व्यंजन) खाने के बाद फिर सो जाते हो! तो उसके बाद उसे पचाने के लिए क्या पुरुषार्थ करते हो?

प्रश्नकर्ता : खुराक के पाचन के लिए आगे-पीछे, घूमना-फिरना पड़ता है।

दादाश्री : वह क्रिया पाचन के लिए निमित्त है और सो जाओ तब श्वासोच्छ्वास अच्छे चलते हैं इसलिए तो मनुष्य 'फ्रेश' हो जाता है। आप नींद में हों, तो भी अंदर पाचन के लिए आवश्यक पाचक रस, 'बाइल' वगैरह मिलते ही रहते हैं। उसे चलाने के लिए कौन जाता है? जैसे अंदर का अपने आप चलता है, वैसे ही बाहर का भी सब कुछ अपने आप ही चलता है। मात्र नैमित्तिक क्रिया, प्रयत्न वगैरह करना पड़ता है। बाकी सब कुछ 'व्यवस्थित' प्रकार से ही प्रबंधित होता है। जन्म लिया तभी से *भोगवटो* (सुख-दु:ख का असर), मान-अपमान, यश-अपयश सब लेकर ही आया हुआ है लेकिन यह अहंकार बाधा डालता है। जो कुछ क्रिया होती है, उसमें खुद को कर्ता मानता है। इसमें करने जैसा क्या है? मात्र आत्मा जानना है। पेट में हाँडवा डालते हैं और अंदर कुदरती सब क्रियाएँ होती हैं। उसी तरह बाहर सब कुदरती रीत से ही चलता है। कितनी खुराक, कितने कदम, किस तरह चलना, कितना चलना, सब अपने आप ही होता रहता है।

दखल देने से मिलता है अगला जन्म

अर्थात् वस्तुस्थिति में व्यवस्थित से बहुत ही अच्छे से एडजस्ट कर लो। पूरा व्यवहार 'व्यवस्थित' चला ही लेता है। बिल्कुल भी अक्ल लड़ाने जैसा नहीं है। चाहे कैसा भी खाना पेट में डालते हैं और रात को सोने के बाद कौन चलाता है? अंदर पित्त रस, पाचक रस वगैरह डालना, वह सब 'व्यवस्थित' ही चला रहा है। अब जो अंदर चला रहा है, वह क्या बाहर नहीं चलाएगा? लेकिन बाहर के समय यह खुद जाग रहा है न, इसलिए तो गड़बड़ किए बगैर रहता ही नहीं न! उसी वजह से अगला जन्म मिलता

है और उसी को कहते हैं कि अगले जन्म के लिए संसार सर्जित किया। यों तो यदि जब वह सो रहा हो तब पच्चीस प्याले फूट जाएँ, फिर भी हर्ज नहीं है। फिर बहन जी क्या कहती हैं कि, 'इनके जागने से पहले सारे टुकड़े बाहर डाल दो वर्ना वे जाग जाएँगे तो तुरंत टंटा करेंगे। तो नींद में ऐसा सब चला ही जाता है न, उसी तरह अब खुली आँखों से सोओ। फिर देखना तो सही कि व्यवहार कैसा होता है। रात भर सोता है फिर भी दाढ़ी अपने आप उगती रहती है न? सुबह उठने पर आँखों से दिखाई देता है, न? उठने पर कानों से तुरंत सुनाई देता है, न? तो यह सब एडजस्टमेन्ट किसने किया? अत: अब ज़रा जागृत होने की ज़रूरत है।

व्यवहार में जागते हुए सोते रहो तो नहीं रहेगा दखल

संसार व्यवहार चलाने के लिए हमें कुछ करना ही नहीं है। व्यवहार, 'व्यवस्थित' चला ही लेता है, 'एक्ज़ेक्ट' चला ही लेता है। हमारे सो जाने के बाद भी अदंर खाना पच जाता है, तो फिर क्या संसार में नहीं चलेगा? इसलिए हमने क्या कहा है कि जागते हुए भी थोड़ा-बहुत सोना पड़ेगा। जागते हुए सोने का मतलब क्या है कि यदि हम जाग रहे हों और प्याले फूट जाएँ तब वैसा ही असर होना चाहिए जैसा सोते समय प्याले फूटने पर होता है। असर में कोई अंतर नहीं होना चाहिए। हमारे सोते समय प्याले फूटें तब कैसे रहते हैं? और जागते समय फूट जाएँ तब बीच में कौन-सा भूत घुस गया? अहंकार और ममता का भूत घुस गया। उस भूत को अगर हमने पहचान लिया तो फिर जागते हुए सो सकते हैं। खुली आँखों से सोएँ तो फिर कोई झंझट ही नहीं रहेगी न! और उसमें क्या बुरा है?

बिन माँगी सलाह देने से गड़बड़

ऐसा है कि, व्यवहार में व्यवस्थित से बाहर कुछ होता ही नहीं है और व्यवहार को जितना बदलने जाता है न, अंदर उतना ही भरा हुआ अहंकार है। अत: हमें इतना समझ लेना है कि यह व्यवस्थित है उसे हमें अव्यवस्थित करके क्या करना है?

व्यवहार में जब कोई पूछे तभी जवाब देना। यों ही दखल देना ही नहीं। उसके बावजूद भी यदि कह दिया तो वह पहले का भरा हुआ माल है क्योंकि अपना तो यह अक्रम है न, तो कर्म खपाए बगैर आए हैं इसलिए भरा हुआ माल निकलेगा।

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी जान-बूझकर कहना पड़ता है इसलिए कहता हूँ।

दादाश्री : नहीं। कहने जैसा तो इस संसार में कुछ है ही नहीं। वह पूछे तो कहना। वह पूछे कि इसका क्या करना है? तब आपको बताना है। बाकी, मन में तो ऐसी ही इच्छा रखना कि यह न पूछे तो अच्छा। ये तो बगैर पूछे ही सामान देते रहते हैं। यदि ग्राहक के मना करने पर भी हम सामान देते रहें तो ग्राहक चिढ़ नहीं जाएगा? फिर ग्राहक अपने सिर पर ही मारेगा लेकिन यदि वह पूछे तो जवाब देना पड़ेगा। हम से यदि कोई पूछने आता है तब हमें लगता है कि भला यह परशेनी कहाँ आई? यदि धर्म के बारे में पूछने आए तो ठीक है लेकिन व्यवहार के बारे में पूछने आए तो परेशानी जैसा लगता है। हम व्यवहार में कुछ नहीं कहते। यदि नमक ज़्यादा हो तब भी हम क्यों कहें? बोलने से तो परेशानी होगी न!

भोक्तापन में नहीं होना चाहिए दखल

व्यवहार तो, व्यवस्थित जिस अनुसार चलाता

है, वह शुद्ध व्यवहार है और उसमें यदि 'हम' दखल दें, तो वह अशुद्ध हो जाता है, दखल नहीं देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : व्यवहार को शुद्ध व्यवहार कैसे समझ सकते हैं?

दादाश्री : व्यवहार, शुद्ध व्यवहार है, ऐसा कब समझ सकेंगे? तब, जब आप एक्ज़ेक्टली व्यवस्थित में रहोगे। एक्ज़ेक्टली व्यवस्थित समझो और एक्ज़ेक्ट रहो। इस संसार में कर्तापन छूट गया है, फिर बचा क्या? पहले कर्ता व भोक्ता दोनों था। अब कर्तापना छूट गया है, भोक्तापना बचा। भोक्तापना में कर्ता नहीं है इसलिए दखल नहीं देता। दखल देने वाला कर्ता है। यह जो भोक्तापना है, वह पूरा योजनाबद्ध है। जैसे कि आपकी कोई योजना बनने के बाद वहाँ पर काम होता है तो योजनाबद्ध चलता रहता है न! वैसे ही यह योजना के अनुसार ही है, यह भोक्तापन है। अत: यदि अब आप इसके अनुसार व्यवस्थित को मानकर चलोगे, तो वह शुद्ध व्यवहार कहलाएगा।

दखलंदाज़ी नहीं करना, उसी को व्यवस्थित कहेंगे

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित में किस प्रकार का रहता है?

दादाश्री : व्यवस्थित अर्थात् चंदूभाई जो कुछ भी कार्य करें, उस कार्य को आप देखते रहो, तो उसे व्यवस्थित कहेंगे। फिर चाहे जो कुछ भी कार्य करे, अच्छा, बुरा या गलत, उसे आप देखते रहो, दखलंदाज़ी नहीं करो, तो उसे व्यवस्थित कहेंगे।

प्रश्नकर्ता : तो फिर उसे ऐसा कहेंगे न कि दृष्टा भाव में रहे?

दादाश्री : वही व्यवस्थित है। क्योंकि वह व्यवस्थित है ही। और कुछ नहीं करना है। यदि दखलंदाज़ी करोगे तो उल्टा ही होगा और जो अच्छा-बुरा है, वह तो टंकी में भरा हुआ माल है, वही निकल रहा है। टंकी में नया आना बंद हो गया है। जो पुराना है वह डिस्चार्ज हो रहा है और नया चार्ज नहीं हो रहा है। अत: जो है वह भरा हुआ है, तो अगर कोई डामर वाला है, तब भी जो भरा है वही माल निकल रहा है, कोई नया माल नहीं निकल रहा। तो आपको क्या करना है कि चंदूभाई जो कुछ भी करे, वह आपको देखते रहना है। आपको चंदूभाई के मन में भी घुसने की ज़रूरत नहीं है। उनके मन में खराब विचार आएँ या अच्छे, हमें उन्हें भी देखते रहना है। क्या आपको थोड़ा-बहुत समझ में आया?

दखल नहीं दे, तो वह शुद्ध व्यवहार

शुद्ध व्यवहार अर्थात् आत्मा कुछ भी दखल न करे। आत्मा जानता रहे और व्यवहार चलता रहे, उसे शुद्ध व्यवहार कहेंगे। फिर चाहे वह कुछ भी हो, डॉक्टर का अस्पताल चला रहा है या खेती कर रहा है या व्यापार कर रहा है, वह नहीं देखना है। बस इतना ही देखना है कि आत्मा कहाँ बरत रहा है। सच में तो, रियली स्पिकिंग अन्य कोई हिंसा, है ही नहीं। कोई जीव मरता भी नहीं है और जन्म लेता भी नहीं है। ये तो सारे *पुद्‌गल* के पुतले बनते हैं और स्पंदन लगते हैं। उसमें फिर वह सामने से दूसरे स्पंदन फेंकता है। इसमें खुद को ऐसी भ्रांति है कि 'यह मैं हूँ' इसलिए उसे खुद को उसका दोष लगता है!

शुद्ध व्यवहार किसे कहेंगे कि जिस व्यवहार में ममता नहीं है। उसे शुद्ध व्यवहार कहेंगे। फिर चाहे कैसा भी हो, उससे हमें कोई लेना-देना नहीं

है। यदि व्यवहार में ममता है तो वहाँ कषाय रहेंगे और वह शुद्ध व्यवहार नहीं कहलाएगा।

मिकेनिकल में हैन्डल मारकर करता है दखल

प्रश्नकर्ता : हम निश्चय और व्यवहार में उलझ जाते हैं।

दादाश्री : किस बारे में? क्यों उलझ जाते हो? निश्चय तो निश्चय है और व्यवहार, व्यवहार है। व्यवहार दृश्य और ज्ञेय है और निश्चय, वह दृष्टा और ज्ञाता है। दोनों अलग ही चीज़ें हैं फिर उलझने की ज़रूरत ही कहाँ रही?

प्रश्नकर्ता : व्यवहार करने जाते हैं तो निश्चय में चूक जाते हैं।

दादाश्री : नहीं चूक सकते क्योंकि व्यवहार उसके जानने वाले सहित है। यदि जानने वाला नहीं है तो व्यवहार भी नहीं है। यदि व्यवहार है तो उसे जानने वाला होना चाहिए और निश्चय है अर्थात् खुद को जानने के लिए नहीं जाना पड़ेगा? आप व्यवहार के जानने वाले हो।

प्रश्नकर्ता : लेकिन यदि व्यवहार कम हो जाएगा तभी निश्चय की तरफ एकाग्रता आएगी।

दादाश्री : ऐसा नहीं है, निश्चय क्या कहता है? देअर इज़ नो कन्डिशन इन निश्चय (निश्चय में कोई शर्त नहीं है। कन्डिशन भी नहीं है, इसमें। जब कोई कन्डिशन नहीं हो, तभी वह निश्चय रहेगा। किसी भी प्रकार की कन्डिशन नहीं होनी चाहिए!

ये सभी व्यवहारिक कार्य करने में तन्मयाकार थे और खुद निश्चय में थे, वह देखा या नहीं?

अब, यदि जानने वाला निश्चय है और करने वाला व्यवहार है तो व्यवहार उसके करने वाले के सहित होना चाहिए। व्यवहार का करने वाला होगा, तभी वह व्यवहार है, वर्ना वह व्यवहार कैसे कहा जाएगा? उस करने वाले को आप पहचानते नहीं हो इसलिए आप ऐसा समझते हो कि मैं ही इसे कर रहा हूँ लेकिन व्यवहार करने वाला है ही।

अर्थात् व्यवहार, व्यवहार के करने वाले के साथ ही है। जैसे कि आपको खाना हो न, तो उँगलिया अपने आप ही काम करती जाती हैं। आप निश्चय में रहो, वे सारा काम करती जाएँगी। यदि आप इसमें घुस गए तो वापस भूल-चूक हो जाएगी। व्यवहार को व्यवहार रहने दो, तो बहुत ही अच्छी तरह से करेगा। क्योंकि मिकेनिकली है। मिकेनिकली में भूल नहीं होती। लेकिन मिकेनिकल में खुद वापस ऐसे हैन्डल मारता है। अरे भाई, मत मारना। वह चल ही रहा है। लेकिन यह दखल देता है।

करने वाला ही नहीं है कोई, तो दखल कहाँ?

यह पूरा संसार दखल ही देता है न! जो व्यवहार चल ही रहा है, उसमें दखल करता रहता है। ऐसे तो व्यवहार कर्ता सहित ही होता है। व्यवहार खुद ही ऐसा कहता है कि, 'अब हमें खाना खाने जाना है।' तब आप कहना, 'चलो'। वह व्यवहार ही खा रहा है। इन्फॉर्मेशन (जानकारी) भी देता है। 'हमें भूख लगी है', ऐसे इन्फॉर्म करता है। प्यास लगे तब भी इन्फॉर्म करता है। व्यवहार खुद ही इन्फॉर्म करता है। उस व्यवहार को देखते रहना है। भूख लगे तब देखो क्या खाता है और क्या नहीं? दोनों हाथों से खा रहा है या एक ही हाथ से? जल्दी में हो तो सोचेगा, 'लाओ न, दोनों हाथों से खा लेता हूँ।' नहीं!

जब थकान लगती है, तब क्या 'आपको'

सो जाना है? यह जो थकान लगती है न, वह आपको इन्फॉर्म करती है। फिर कहता है, 'अब मैं सो जाता हूँ।' तब आपको कहना है, 'सो जाओ, हाँ! बिस्तर में एक ही तकिया है, तो भाई, दो ले लो न, आराम से, हं.. आराम से सो जाओ न! चादर बदलनी हो, तो बदल दो।' अपने आप ही सारा व्यवहार होता जाता है और व्यवहार करने वाला, व्यवहार सहित ही होता है। वर्ना, व्यवहार कैसे हो सकता है? व्यवहार हो ही नहीं सकता!

प्रश्नकर्ता : अर्थात् दादा, पूरा ही बदल गया कि व्यवहार 'मैं' नहीं करता हूँ। पहले तो ऐसा ही मानकर चलते थे कि यह व्यवहार 'मैं करता हूँ।'

दादाश्री : लेकिन इसमें ''मैं' करता है,' ऐसा है ही नहीं न। 'मैं नहीं करता और वह भी नहीं करता,' प्रश्न वह भी नहीं है। व्यवहार करने वाला है ही, उसे हमें देखते रहना है कि कौन कर रहा है यह?

व्यवहार करने वाले को देखने पर नहीं रहता दखल

अपना ज्ञान ऐसा है कि व्यवहार करने वाले को दिखाएगा कि, 'ऐसा हुआ, देखो न!' यह वाक्य बहुत उच्च प्रकार का है, समझने जैसा है। आज ही निकला यह वाक्य, हम भी सोच में पड़ गए! हमारे ध्यान में था लेकिन शब्द के रूप में नहीं था। वह तो जब पूछा जाए, तभी निकलता है। बगैर पूछे यह नहीं निकलता इसलिए पूछ लेना। यह रेडियो नहीं है!

व्यवहार, व्यवहार करने वाले सहित ही है। इसलिए फिर उसमें दखल ही नहीं रहा और हमने जाना कि 'ओहो! व्यवहार का करने वाला है।' फिर उसमें हमारा कहाँ दखल रहा? उसे देखते रहेंगे तो व्यवहार करने वाला करता ही रहेगा। लेकिन बीच में अक्ल लगाने जाते थे भीतर, व्यवहार करने वाले के आने से पहले ही घुस जाते थे। इसलिए बेचारा व्यवहार करने वाला बाहर ही खड़ा रहता था बेचारा!

वाक्य बहुत अच्छा है। ऐसा कभी-कभी निकल जाता है। यह 'ज्ञान' हमारे *लक्ष* (जागृति) में था लेकिन वह ज्ञान शब्दों में नहीं आया था। व्यवहार, व्यवहार करने वाले सहित ही होता है। अत: उसमें आपका कोई दखल नहीं होगा। व्यवहार में उतरना ही नहीं पड़ेगा। जहाँ निश्चय व व्यवहार आएँ तो वहाँ व्यवहार अलग ही रहेगा।

प्रश्नकर्ता : फिर आप आगे ऐसा नहीं कहेंगे कि इसका करने वाला मैं नहीं।

दादाश्री : नहीं। यदि ऐसा कहेंगे तो परेशानी है न! व्यवहार उसके करने वालों के सहित ही होता है, ऐसा कहा तभी से समझ जाना है। उसमें फिर, 'मैं नहीं हूँ', ऐसा कहने से क्या होता है कि उन सभी को गुस्सा आ जाएगा। हम कभी भी ऐसा नहीं कहते कि, 'यह मैं नहीं कर रहा हूँ वर्ना वे भी नहीं करेंगे। यों भी 'मैं नहीं करता और मैं करता हूँ', ऐसा अपने पास कहने को था ही कहाँ? हम तो ज्ञाता-दृष्टा वाले फिर यह बात, यह शब्द ही कहाँ से होंगे? ज्ञाता-दृष्टा बनने के बाद अपनी भाषा ही बदल जानी चाहिए। वाक्य बहुत बड़ा है कि, 'व्यवहार, व्यवहार के करने वाले सहित ही होता है।' अत: बात बोझ रहित हो गई। व्यवहार निर्बोझ हो गया।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादाजी, मैं क्या समझा हूँ कि करने वाला व्यवस्थित ही है न!

दादाश्री : व्यवस्थित है, लेकिन वह उसके करने वाले सहित ही है।

व्यवस्थित नहीं समझने से दखलंदाज़ी

अब, इस व्यवस्थित को यदि यथार्थ रूप से समझ लें न, तो ऑफिस में आठ घंटे का काम एक घंटे में हो सकता है। दर्शन इतना बढ़ जाएगा कि एक ही घंटे में हो जाएगा।

जिसे हमने व्यवस्थित शक्ति कहा है न, तो इस शरीर के सारे अवयव उसी के ताबे में हैं। हम सहज भाव से 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा मानकर व्यवस्थित को सब सौंप दें है और दखलंदाज़ी नहीं करनी है। 'यदि काम पर नहीं जाएँगे तो क्या बिगड़ जाएगा' ऐसा कुछ भी नहीं कह सकते, वह दखलंदाज़ी कही जाएगी। जाना अपनी सत्ता में नहीं है, तो ऐसा कैसे कह सकते हैं? वह दखलंदाज़ी करता है न, इसलिए बात समझ में नहीं आती। वर्ना बहुत ही सरलता से काम हो जाता। संसार बहुत अच्छे से चले, ऐसा है।

औरंगाबाद जाते समय यदि कोई ज़्यादा दिमाग़ वाला बहुत सोच-विचार करे कि, 'इतने सारे लोग आने वाले हैं तो अपने खाने का क्या ठिकाना रहेगा?' होगा या नहीं? वहाँ सोने का ठिकाना रहेगा या नहीं? अब बहुत सोचता रहेगा तो वह औरंगाबाद जा पाएगा क्या?

प्रश्नकर्ता : कहाँ से जाएगा?

दादाश्री : 'औरंगाबाद जाना है तो टाइम सब काम कर लेगा', ऐसा कहना। वह व्यवस्थित के अधीन है। अत: जिस टाइम पर जो काम होना है वह टाइम ही इटसेल्फ काम करेगा।

बिगड़ने के बाद सुधरता तो है, लेकिन जब बिगड़ता है तब ध्यान बिगड़ जाता है। यदि असर नहीं हो न, तो अपना यह ज्ञान सही कहा जाएगा। अत: उस समय इतनी तैयारी रखनी है कि ध्यान नहीं बिगड़े।

इस संसार में कुछ भी नहीं बदल सकता, तो फिर हमें क्यों सोचना है? एक बार व्यवस्थित हो चुका है, हमें तो सिर्फ प्रयत्न ही करने हैं। हमें कहना है, 'चंदूभाई प्रयत्न करो, प्रयत्न करो।' और जब इसके नहीं मिलने पर चंदूभाई परेशान हो जाएँ तब कहना, 'भाई, ले! तुझे अब यह दूसरी चीज़ देते हैं।' ऐसे करके चंदूभाई को खुश रखना है। पड़ोसी को कुछ भी करके अटा-पटाकर काम लेना। हमें कुछ नहीं चाहिए, संपूर्ण रूप से अपरिग्रही हैं! व्यवस्थित थोड़ा-बहुत समझ में आया क्या? समझ में आता है न?

व्यवस्थित को समझने में बुद्धि करती है दखल

प्रश्नकर्ता : बहुत बार ऐसा होता है, कि 'व्यवस्थित है' ऐसा कहने पर भी मन नहीं मानता और दाव-पेंच लगाता ही है।

दादाश्री : नहीं मानता ऐसा मन है? तो फिर व्यवस्थित या दूसरा कुछ ज्ञान पहुँचेगा ही नहीं न!

प्रश्नकर्ता : इस तरह बहुत हिल जाता है पूरा!

दादाश्री : तुझे भी ऐसा हो जाता है?

प्रश्नकर्ता : मुझे तो तुरंत हो जाता है।

दादाश्री : तुझे भी हो जाता है? दोनों कमज़ोर! वर्ना यह तो कमज़ोर नहीं पड़ता। व्यवस्थित कह दिया तो कह दिया!

प्रश्नकर्ता : इससे फिर यह सब जो राह पर आया है वह सब बिगड़ जाता है।

दादाश्री : भला कोई क्या बिगड़ेगा अपने घर? एक-दो दिन कोई बिगाड़ सकता है फिर तीसरे दिन से तो उसके जोड़ ही तोड़ देंगे न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन फिर ऐसा लगता है कि ऐसा कैसा व्यवस्थित?

दादाश्री : फिर व्यवस्थित की निंदा करता है? ओहोहो! अलग ही जात है! तूने ऐसा नहीं कहा न कभी भी? ये तो तुझ से भी तेज़ है! यह तो बहुत विकट है! व्यवस्थित अर्थात् व्यवस्थित। वर्ना हम अव्यवस्थित नहीं कहते? अंधेरी रात में, चाहे किसी भी समय, कबूल करने जैसी चीज़ है! बुद्धि ऐसा दिखाती है कि 'ऐसा कैसा व्यवस्थित'! उस बुद्धि को इतना पोषण दिया था कि वह चढ़ बैठती है।

यदि बुद्धि दखल नहीं दे तो ऐसा लगेगा ही कि व्यवस्थित है। उनमें से सिर्फ बुद्धि ही बीच में दखल देती है। जैसे कि यदि बुद्धि सीधी हो तो वह ऐसा नहीं करेगी। दखल तो उल्टी, विपरीत बुद्धि देती है। सीधी बुद्धि दखल नहीं देती।

उदय कर्म के अधीन रहेंगे तो नहीं रहेगा दखल

प्रश्नकर्ता : हमारे निश्चय करने से व्यवस्थित में बदलाव हो सकता है क्या?

दादाश्री : निश्चय करते हो तो वह भी पूर्व का डिस्चार्ज है और निश्चय नहीं करते हो तो वह भी पूर्व का डिस्चार्ज है। कैसा निश्चय होता है, उस पर व्यवस्थित आधारित है। अत: देखो क्या होता है!

निश्चय करने के भी आप कर्ता नहीं हैं। यह तो डिस्चार्ज रूपी निश्चय है।

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं कह सकते न कि पूर्व जन्म के डिस्चार्ज में होगा तो हो जाएगा?

दादाश्री : ऐसा कह ही नहीं सकते, वह तो जोखिम है। घर पर जमाई बीमार हों और आप कहो कि डिस्चार्ज में होगा तो ठीक हो जाएगा। तो फिर कोई कामकाज़ ही नहीं करेंगे। अब यह भी डिस्चार्ज है लेकिन घर पर यदि ऐसा कहे तो समझना कि जमाई मरने को हैं।

हाँ, अनुभव ज्ञानी द्वारा तो सहज प्रयत्न होते रहते हैं। वे उदय कर्म के अधीन रहते हैं जबकि लोग तो गड़बड़ किए बगैर नहीं रहते। लोग उदय कर्म के अधीन नहीं रहते इसलिए हम इन्हें प्रयत्न करने को कहते हैं, वर्ना अगला जन्म बिगाड़ देंगे।

जहाँ सहज प्रयत्न वहाँ नहीं रहता दखल

हम क्या कहते हैं, कि अपने पुण्य का खाओ! पुण्य किसे कहेंगे कि कोई घर आकर सुबह साढ़े पाँच बजे उठाए कि, 'भाई, हमें बंगला बनवाना है। आपको कॉन्ट्रैक्ट देना है।' यदि मालिक भागदौड़ न करे तो व्यवस्थित मालिक को उठाने आता है और मालिक यदि बंगले के लिए भागदौड़ करे तो व्यवस्थित क्या कहेगा कि 'हो रहा है अब!'

व्यवस्थित के बाहर कुछ होने वाला नहीं है। हमें व्यवस्थित का ऐसा अर्थ नहीं निकालना चाहिए। व्यवस्थित कहना हो तो अपना प्रयत्न होना चाहिए। व्यवस्थित जितने प्रयत्न करवाए उतने ही लेकिन अपनी इच्छा क्या होनी चाहिए? प्रयत्न करने की। फिर व्यवस्थित जितने प्रयत्न करवाए उतने करना। प्रयत्न अर्थात् सुबह दस बजे से ही जाने लगे वसूली के लिए तो वह व्यक्ति बारह बजे तक नहीं मिला तब फिर ऐसा नहीं कि घर आकर वापस डेढ़ बजे जाएँ। प्रयत्न यानी कि एक बार जाकर आ जाना। फिर वापस मत सोचना। ये तो कितने प्रयत्न करते हैं? बार-बार जाते हैं।

सहज प्रयत्न किसे कहेंगे कि हम जिसे ढूँढ रहे हों वह सामने से आ मिले। उसके घर जाने पर वह मिले, ऐसा नहीं, लेकिन हम जा रहे हों तभी सामने से आ मिले। हमारे सारे सहज प्रयत्न होते हैं। सहज रूप से ही यों हिसाब से ही सब सेट हुआ रहता है किसी प्रकार का दखल ही नहीं न।

जो दखल करता है उसके लिए भी संसार व्यवस्थित

प्रश्नकर्ता : 'कोई कर्ता नहीं है' ऐसा कहा, इसका अर्थ क्या ऐसा हुआ कि व्यवस्थित सेट ही है?

दादाश्री : वास्तव में सेट ही है, लेकिन लोगों से ऐसा नहीं कह सकते। यदि ऐसा कहेंगे तो लोग कैसे हैं? ऐसे हैं कि हाथ भी नहीं हिलाएँ। हाथ से कहेंगे कि, 'तू हिलना ही मत।' तो उल्टी प्रक्रिया हो जाएगी। सहज रूप से रहना है। यदि सहज रूप से रह पाए, जो मन-वचन-काया में दखल नहीं करे, उनके लिए संसार व्यवस्थित ही है, सेट ही है! लेकिन यह तो मन-वचन-काया में दखल करता है कि, 'अब, नहीं जाएँगे तो चलेगा।' इसे समझना है। यहाँ पर दखल करे, जो रोता रहे उसके लिए भी व्यवस्थित है और जो हँसकर करे उसके लिए भी व्यवस्थित है। कुछ नहीं बदल सकता।

व्यवस्थित के दुरूपयोग से होती है दखलंदाज़ी

प्रश्नकर्ता : ऐसा कह सकते हैं न कि व्यवस्थित अर्थात् सब कुछ सेट ही है।

दादाश्री : हाँ, ऐसे बोलते नहीं रहना है कि 'व्यवस्थित में होगा तो सत्संग में जा पाएँगे।' ऐसा नहीं कहना है, वर्ना फिर जा नहीं पाएँगे। हमें 'जाना है' ऐसा तय करना है। तय करने के बावजूद भी सामने से कुछ उल्टा आए तो 'व्यवस्थित' कहकर हमें फाइल का समभाव से *निकाल* करना है। अर्थात् 'व्यवस्थित' का दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। यह 'व्यवस्थित' का ज्ञान तो बहुत शांति देता है, ज़रा भी परेशान नहीं होने देता!

यदि कोई इस ज्ञान का दुरूपयोग करेगा तो वह दखल किए बगैर रहेगा ही नहीं! अत: दखलंदाज़ी नहीं करनी है, सहज भाव से रहना है। हम रहते हैं न सहज भाव से! 'मैं' 'पटेल' से कहता हूँ, 'रोज़ चार बजे सत्संग में जाना है,' वर्ना फिर हो चुका!' 'ऐसा 'सेट' ही है,' कह दिया तो बात खत्म! 'सेट हो चुका है', ऐसा नहीं कह सकते। सेट हो ही चुका है लेकिन वह ज्ञानी की दृष्टि से सेट है और ज्ञानी ने आपको यह बात अवलंबन के रूप में दी है। यह एक्ज़ेक्ट अवलंबन है लेकिन इसका उपयोग हमारे समझाए अनुसार करना। आपकी समझ के अनुसार मत करना।

पहले से ही व्यवस्थित कहने से हो जाता है दखल

प्रश्नकर्ता : 'गाड़ी समझदारी से चलानी है।' यह जो बात है उसमें डिस्चार्ज का भाग कितना और समझ का भाग कितना है?

दादाश्री : गाड़ी चलाना वह पूरा भाग डिस्चार्ज है, वह समझदारी से ही चलानी है। जो सावधानी है वह भी डिस्चार्ज है।

प्रश्नकर्ता : डिस्चार्ज भाव ही व्यवस्थित है तो समझदारी से चलाना भी व्यवस्थित है?

दादाश्री : वह व्यवस्थित में ही है। उसे पहले से 'व्यवस्थित' कहकर वह हिला देता है।

मैं आपसे पूछता हूँ कि कोई व्यक्ति

हमेशा क्या एक ही प्रकार से हस्ताक्षर करता है? वही व्यक्ति जब चिढ़ जाए तब कैसे हस्ताक्षर करता है?

प्रश्नकर्ता : तो वे बदल जाएँगे। वर्ना एक ही समान होते हैं।

दादाश्री : फिर जब खूब नाराज़ हो तब? जब यों फूलों की माला पहनाकर खूब-खुश कर दिया जाए, तब वह कैसे हस्ताक्षर करेगा?

प्रश्नकर्ता : तब भी फर्क आ जाएगा।

दादाश्री : घबराहट में हस्ताक्षर करे वह अलग, चिढ़कर हस्ताक्षर करे वह अलग। इस तरह इमोशनल नहीं होना चाहिए। इमोशनल होने से काम बिगड़ जाता है, वही काम। अत: पहले से ही ऐसा कहने से कि 'व्यवस्थित है', इमोशनल हो जाता है। आपको सिर्फ जानना ही है कि 'व्यवस्थित' है। पहले से ही 'व्यवस्थित' कह दोगे तो दुरूपयोग किया और फिर आप व्यवस्थित का उल्टा अर्थ कर देते हो। 'आँखें मींचकर चलो न, कहते हैं। यानी आपने इसमें दखल दिया, शरीर में। आपको ऐसे करने का, कुछ भी इधर-उधर करने का अधिकार नहीं है।

प्रश्नकर्ता : साधारणतया तो शरीर ऐसा ही है कि गाड़ी चलाते समय आँखें बंद ही नहीं होती ।

दादाश्री : हाँ, बंद ही नहीं होतीं, वह भी नियम है न। पूरी सावधानी रहती ही है। 'व्यवस्थित है', ऐसा कहने से सावधानी कम हो जाती है और यदि सावधान नहीं रहें और टकरा जाए तो?

प्रश्नकर्ता : उसे व्यवस्थित नहीं कहेंगे।

दादाश्री : ऐसा रहता है क्या? सावधानी से होना चाहिए न!

प्रश्नकर्ता : वह जो बात है, कि 'सावधानीपूर्वक चलाओ', वह किसमें से है? प्रज्ञा में से आती है या विवेक बुद्धि में से आती है या समझ की वजह से आती है? इन तीनों में से किसमें से आती है?

दादाश्री : अनुभव से। कुछ समय में अनुभव हो जाता है। फिर वह वापस सेट करता है। गलती होने के बाद सोचें, तब उस समय पता चलता है कि 'ऐसी भूल हुई अत: अब अगली बार ध्यान रखूँगा तब फिर उस समय ऐसी भूल नहीं होगी।'

प्रकृति के कार्य में दखल नहीं करना वह व्यवस्थित

प्रश्नकर्ता : यदि कोई कहे कि 'अब जो होना होगा, वह होगा', तो?

दादाश्री : नहीं चलेगा। इसलिए हम जो ज्ञान देते हैं, वह अलौकिक ज्ञान देते हैं सभी को। 'व्यवस्थित' का अर्थ यदि समझ जाए तो काम निकाल लेगा। और भ्रांति वाला कब उसका अर्थ बिगाड़ दे, कहा नहीं जा सकता।

प्रश्नकर्ता : यदि व्यवस्थित कहकर बैठा रहे तो दुनिया ऐसा कहेगी कि, 'यह तो आलसियों का सरदार है। कोई भी काम नहीं करता।

दादाश्री : व्यवस्थित कहकर कब बैठे रहना है? ऐसा 'व्यवस्थित' किसे कहते हैं, वह आपको बताता हूँ। अपनी प्रकृति के कार्य में और बाहरी एविडेन्स के कार्यों में दखल नहीं करे, उसे 'व्यवस्थित' कहेंगे।

बाहर के संयोगों में और अपनी प्रकृति के कार्यों में, हाथ ऊपर हो या पैर आगे-पीछे हों

या फिर जब अंदर वालों के कहने पर यह चलने लगे, तब, इन सभी में हमें ज्ञाता-दृष्टा रहना है, तो वह व्यवस्थित है।

प्रश्नकर्ता : फिर से कहिए।

दादाश्री : फिर से कहूँ? 'शुद्धात्मा' के अलावा बाकी का सब प्रकृति है। वह प्रकृति और बाहर के संयोग सब मिलकर जो कार्य करते हैं, वह सब व्यवस्थित।

शुद्धात्मा के अलावा और कौन सा भाग बचा? प्रकृति बची। वह गुनहगारी है। वह प्रकृति जो कुछ भी करे, उसमें हमे ऐसा भी नहीं कहना है कि 'तू तेज़ी से कर' और 'मत करना' ऐसे भी नहीं कहना है। हमें ज्ञाता-दृष्टा रहना है, तो 'व्यवस्थित' है।

कभी इसलिए भी कह देना पड़ता है कि, 'व्यवस्थित है ताकि प्रकृति को शांति रहे।' क्योंकि भीतर तरह-तरह की उलझनें होती रहती हैं। लौकिक ज्ञान हाज़िर हो जाता है इसलिए हमें पहले से ही यह ज्ञान बता देना पड़ता है कि, 'व्यवस्थित है।' बाकी व्यवस्थित का अर्थ यह है कि प्रकृति के कार्य में दखल नहीं देना।

अभ्यास करना है, दखल नहीं

प्रश्नकर्ता : इस प्रकृति के विभाग में दखलंदाज़ी हो ही जाती है, उसे क्या कहेंगे?

दादाश्री : व्यवस्थित की चीज़ में दखलंदाज़ी हो ही नहीं सकती दखलंदाज़ी तो जब 'हम' करेंगे तभी होगी।

प्रश्नकर्ता : चंदूभाई से जो दखलंदाज़ी हो जाती है तो वह उसका अध्यास कहा जाएगा?

दादाश्री : नहीं, अध्यास नहीं। वहाँ पर उसकी ज्ञान की जागृति मंद हो गई है। कोई आए तो 'तू क्यों आया है?' ऐसा हुआ तो दखलंदाज़ी हो गई उससे गड़बड़ हो जाती है। उस समय दखल मत करना।

प्रश्नकर्ता : तो क्या हमें दादा से सिर्फ इतना ही माँगना है न कि व्यवस्थित के ज्ञान में रहने की शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए?

दादाश्री : 'शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए,' माँगना ज़रूर लेकिन फिर उसका अभ्यास करते रहना। पूरे दिन अभ्यास नहीं हो सकता लेकिन दो घंटे तो हो सकता है। हमें तय करना है कि दो घंटे तक मुझे किसी भी तरह की गरबड़ नहीं करनी है। व्यवस्थित के ज्ञान में रहना है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, इतना तो हो सकता है।

दादाश्री : उसमें फिर उसे इस तरह से अलग देखे कि प्रकृति व्यवस्थित के ताबे में है तो फिर आत्मा की शक्ति बढ़ती जाएगी, इस अभ्यास से।

'चंदूभाई' जो है वह आपका उदय स्वरूप है। अत: वह जो है, वह पूरा ही व्यवस्थित के ताबे में है। अत: वह जो कुछ भी करे उसे आपको देखते रहना है। चंदूभाई को प्रेरणा भी व्यवस्थित शक्ति देती है और आपको 'देखते' रहना है कि 'चंदूभाई क्या कर रहे हैं।'

प्रश्नकर्ता : हमें जो विचार आते हैं, क्या वह सब भी व्यवस्थित है?

दादाश्री : ये जो विचार आते हैं न, वे विचार भी व्यवस्थित लाता है। मन निरंतर घूमता ही रहता है और विचारों आते ही रहते हैं। वे विचार ज्ञेय हैं और हम ज्ञाता हैं। हमें ज्ञाता-ज्ञेय का संबंध रखना है। हमें विचारों को देखते रहना है।

यदि व्यवस्थित के ज्ञान के प्रति सिन्सियर तो नहीं होगी गड़बड़

हम सब के लिए तो अब 'व्यवस्थित' में जो हो, वह ठीक और नहीं हो तो वह नहीं, परंतु यह भाव पक्का रहना चाहिए कि 'मुझे कुछ भी नहीं चाहिए'। यदि उसके प्रति 'सिन्सियर' रहें तो कुछ भी गड़बड़ हो, वैसा नहीं है। 'व्यवस्थित' में जो मिलने वाला है उतना ही मिलेगा, उसमें कुछ बदलाव नहीं होता। बल्कि लाभ यह है कि चिंता और बेचैनी कम हो जाती है।

हमने तो सत्ताईस साल से टेन्शन देखा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : यदि व्यवस्थित ठीक से समझ में आ जाए, तो वरीज़ या टेन्शन कुछ भी नहीं रहेगा।

दादाश्री : कुछ भी नहीं रहेगा।

'व्यवस्थित' के ज्ञान से हमें भय नहीं रहता, सारे भय खत्म हो जाते हैं। बहुत से गलत भय लोगों को मार देते हैं। वे सभी विपरीत भय कहलाते हैं। पूरे दिन, 'ऐसा हो जाएगा, वैसा हो जाएगा वैसा हो जाएगा,' वह सब दखलंदाज़ी है। जिसे यह व्यवस्थित समझ में आ जाए उसके चिंता, दुःख व भय, सभी निकल जाते हैं।

गड़बड़ हुई तो समझो कि समझने में भूल हो गई

ज्ञान प्राप्ति के बाद यह संसार गड़बड़ रहित है। ज्ञान लेने से पहले सारा गड़बड़ ही था लेकिन ज्ञान लेने के बाद यदि कोई भी गड़बड़ हो तो समझना कि अपने समझने में भूल हो रही है। संसार में प्रॉब्लेम जैसी चीज़ है ही नहीं लेकिन अपने समझने में भूल हुई है। गड़बड़ क्यों होती है? और यदि होती है तो वे सारे हिसाब हैं!

आपकी बिलीफ में तो आ गया है न कि दादा का ज्ञान साइन्टिफिक है, अक्रम विज्ञान है यह तो! ज्ञान साइन्टिफिक होना चाहिए। चाहे कैसे भी लोग हों, चाहे कितने भी पढ़े लिखे हों, बड़ा साइन्टिस्ट हो या चाहे कैसा भी हो, फिर भी उसे एक्सेप्ट हो ही जाना चाहिए। यदि नहीं करता है तो हमें समझना चाहिए कि उसमें कोई गाफिलपन है, कोई गफलत है उसमें। साइन्टिस्ट भी कबूल करते हैं। विज्ञान अर्थात् विज्ञान, संदेह रहित। उसकी बिलीफ में आना चाहिए। हम जानते हैं कि बिलीफ में आएगा तो आचरण में आएगा। अतः यह संसार जैसा है वैसा एक्ज़ेक्ट व्यवस्थित ही है। जो चल रहा है, वही करेक्ट है लेकिन यदि करेक्टनेस में अभी भी बुद्धि बहुत उछल-कूद कर रही है न, तब तक वह व्यवस्थित को समझने नहीं देगी।

प्रश्नकर्ता : हाँ, बुद्धि उछल-कूद करती है।

दादाश्री : हाँ। 'ऐसा होगा और वैसा होगा', ऐसी कल्पनाएँ करवाती हैं। हालाँकि अब अपने लिए कल्पना नहीं रही लेकिन व्यवहारिक रहा न! व्यवहार डिस्चार्ज में है। चार्ज-वार्ज नहीं रहा।

प्रश्नकर्ता : ठीक है। और यदि वह समझ में आ जाए तो व्यवस्थित ठीक से समझ में आ जाएगा।

दादाश्री : धीरे-धीरे व्यवस्थित पर श्रद्धा बैठती जाएगी, वर्ना बैठेगी ही नहीं न!

वह इस ज्ञान के अनुभव के आधार पर समझ में आएगा कि संसार कहाँ बैठा है बेचारा!

सभी साधु-संत कहाँ बैठे हैं? रास्ते में मार खा रहे हैं सारे।

व्यवस्थित की संपूर्ण समझ से होता है केवलज्ञान

गाड़ी में से उतार दें तो समझना कि 'व्यवस्थित' है। फिर वापस बुलाएँ, तब भी 'व्यवस्थित' और फिर उतार दें, तब भी 'व्यवस्थित'। ऐसे सात बार उतार दें, तब भी 'व्यवस्थित'! सात बार चढ़ाएँ तब भी 'व्यवस्थित'! ऐसा जिसे बरतता है उसे केवलज्ञान हो जाएगा! हमने ऐसा 'व्यवस्थित' दिया है कि केवलज्ञान हो जाए, 'व्यवस्थित' यदि संपूर्ण रूप से, पूरापूरा समझ ले तो! 'व्यवस्थित' तो चौबीसों तीर्थंकरों के शास्त्रों का सार है।

प्रश्नकर्ता : आपको पहले व्यवस्थित समझ में आया होगा, बाद में यह ज्ञान देने लगे न?

दादाश्री : हाँ, बाद में ही दिया था न! 'व्यवस्थित' मेरे अनुभव में कितने ही जन्मों से आ चुका है और उसके बाद ही मैंने यह बाहर दिया। नहीं तो दे ही नहीं सकते न! इसमें तो जोखिमदारी आती है। वीतरागों का एक अक्षर भी बोलना और किसी को उपदेश देना, बड़ी जोखिमदारी है। आपको कितनी बार मोटर में से उतार दें तो 'व्यवस्थित' हाज़िर रहेगा?

प्रश्नकर्ता : चार-पाँच बार, फिर कमान छटक जाएगी।

दादाश्री : कमान छटक जाए तो वह *पुद्गल* (जो पूरण और गलन होता है) की छटकेगी। 'हमें' तो 'जानना' है कि यह *पुद्गल* की कमान छटकी है। हमें तो क्या कहना है कि, 'यह *पुद्गल* की कमान छटकी है फिर भी 'मैं' वापस आ गया और मोटर में बैठ गया।' इसकी कमान छटक गई है, ऐसा 'हमें' 'जानना' चाहिए। यह 'व्यवस्थित' ऐसा सुंदर है! यदि कमान छटके और वापस *आड़ा* (नाराज़) होकर चला जाए और फिर वापस नहीं आए, तो वह गलत कहा जाएगा। यह 'व्यवस्थित' समझ में आ गया, फिर कुछ भी दखलंदाज़ी करने जैसा है ही नहीं। *पुद्गल* का जो होना हो सो हो, हमें *आड़ा* नहीं होना है। *पुद्गल* तो हमें *आड़ा* करने की ताक में लगा रहता है।

व्यवस्थित कहता है कि दखलंदाज़ी मत करना

प्रश्नकर्ता : यदि व्यवस्थित दिमाग़ में आ जाए, तो फिर कोई दुःख है ही नहीं।

दादाश्री : लेकिन वह भी देखने जैसा रहता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, देखने जैसा है। हमें व्यवस्थित कैसा सिखाकर जाता है! अनुभव देकर जाता है। सुंदर-सुंदर अनुभव देता है। समझ देता है।

दादाश्री : व्यवस्थित क्या कहना चाहता है कि दखलंदाज़ी मत करना। व्यवस्थित ही है, ऐसा ही है, यही सही है। आप जो मानते हो, वह गलत है ऐसा कहना चाहते हैं।

प्रश्नकर्ता : सही बात है।

दादाश्री : ऐसा है, अब चंदूभाई को अपना काम नहीं निकालना है, अब तो 'हमें' अपना काम निकाल लेना है। अर्थात् हमें व्यवस्थित समझ लेना है। यदि व्यवस्थित को समझ लिया न तो, उसे राग-द्वेष रहेंगे ही नहीं। 'पढ़ा है', ऐसा तो तब कहेंगे जब वह व्यवस्थित को इस तरह से एक्ज़ेक्ट समझ लेगा।

- जय सच्चिदानंद

प्रकृति, अहंकार के ताबे में या व्यवस्थित के?

प्रश्नकर्ता : प्रकृति और व्यवस्थित एक ही चीज़ है?

दादाश्री : अपनी प्रकृति व्यवस्थित के ताबे में है और अज्ञानी की प्रकृति अहंकार के ताबे में है। 'अहंकार के ताबे में है,' इसका मतलब क्या है? वह पागलपन भी कर सकती है। अहंकारी इंसान व्यवस्थित की तो सुनता ही नहीं है न! अपने महात्माओं का तो वह अहंकार चला गया है, उसके बाद सिर्फ व्यवस्थित रहा।

प्रश्नकर्ता : व्यवस्थित और प्रकृति के बीच संबंध है क्या?

दादाश्री : है न संबंध। प्रकृति व्यवस्थित ही है सारी। प्रकृति ऐसे कोई गप्प नहीं है। व्यवस्थित अर्थात् सत्तानवे के बाद अठानवे आकर खड़ा रहता है वह तो। अठानवे के बाद नब्बे नहीं आएगा, वह भी व्यवस्थित है। जैसा शोभा दे उस तरह से आता है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् प्रकृति और व्यवस्थित में कुछ फर्क है?

दादाश्री : बहुत फर्क है। व्यवस्थित, वह तो कार्य करता है, जबकि प्रकृति तो डिज़ोल्व होती रहती है। व्यवस्थित शक्ति को अंग्रेजी में 'साइन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडेन्स' कहता हूँ।

प्रश्नकर्ता : प्रकृति डिज़ोल्व होती रहती है तो फिर प्रकृति का नाश हो जाना चाहिए ना?

दादाश्री : हाँ, नाश ही तो होने लगा है न यह, अब *निर्जरा* (आत्म प्रदेश में से कर्मों का अलग होना) ही होने लगेगी न। यह ज्ञान लेने के बाद नया कर्म नहीं बंधता, पुराने कर्म विलय होते रहते हैं, डिस्चार्ज होते रहते हैं। नया चार्ज नहीं होता। जब तक ऐसा भान था कि 'मैं कर्ता हूँ', तब तक नया चार्ज हो रहा था और अगर 'व्यवस्थित' कर्ता है तो, वहाँ पर उसका चार्ज होना बंद हो जाता है। उसके बाद फिर सिर्फ डिस्चार्ज ही होता रहता है।

प्रकृति को भोगते हैं, वह व्यवस्थित है। प्रकृति बनाई वह व्यवस्थित नहीं है। नई उत्पन्न करना वह व्यवस्थित नहीं है। ज्ञान नहीं हो तो नई प्रकृति उत्पन्न करता रहता है फिर। ज्ञान हो तो प्रकृति उत्पन्न होती ही नहीं, कॉज़ेज़ खत्म हो जाते हैं!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, तो वह प्रकृति इफेक्ट है न?

दादाश्री : हाँ, प्रकृति इफेक्ट है, लेकिन सिर्फ प्रकृति को ही इफेक्ट नहीं कह सकते। प्रकृति में इफेक्ट और कॉज़ेज़ दोनों गुण रहे हुए हैं। उनमें से कॉज़ेज़ के अलावा बाकी का सारा भाग इफेक्ट है। अत: हम कॉज़ेज़ बंद कर देते हैं, इसलिए आपसे कह देते हैं कि 'व्यवस्थित है।' यदि कॉज़ेज़ ज़ारी रहें तो उसे व्यवस्थित नहीं कहा जा सकता।

प्रकृति का मतलब क्या है कि पूर्वजन्म में वह माल भरा था। पूर्वजन्म में जो माल भरा है, वह अभी प्रकट हो रहा है और अभी जो भरोगे वह अगले जन्म प्रकट होगा, उसे कहते हैं प्रकृति।

परम पूज्य दादाश्री की ज्ञानवाणी में से संकलित

दादाई जगकल्याण मिशन - सत्संग हाइलाईट्स

25-26 मार्च : इस साल जर्मनी के दो शहरों में ज्ञानविधि का आयोजन हुआ। मुनिक में पहली बार पूज्यश्री के दो दिवसीय सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वार्षिक कार्यक्रम विलिंगन में आयोजित किया जाता है, जो लोग वहाँ नहीं जा सकते, उन लोगों ने यहाँ सत्संग व ज्ञानविधि का लाभ प्राप्त किया। सत्संग में 250 लोग उपस्थित रहे और ज्ञानविधि में 205 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। इंग्लिश गार्डन में तालाब के पास स्थानीय महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ इन्फॉर्मल समय बिताया और पूज्यश्री के साथ वॉक और गरबा किए, वहाँ पर एक डॉक्यूमेन्टरी की रिकॉर्डिंग की गई। डॉक्यूमेन्टरी में पूज्यश्री से 'अक्रम विज्ञान' और उसके सिद्धांतों के बारे में प्रश्न पूछे गए। पूज्यश्री विश्व प्रसिद्ध कार कंपनी BMW का प्लान्ट भी देखने गए, जिसमें कार कैसे बनती है उसकी पूरी प्रॉसेस देखा। उसके बाद पूज्यश्री सेइन्ट लुकास चर्च भी देखने गए, वहाँ दर्शन और जगत् कल्याण की भावना किए और उसके बाद विलिंगन गए।

29 मार्च से 1 अप्रैल : जर्मनी के विलिंगन शहर में हर साल की तरह इस साल भी 'अक्रम विज्ञान इवेन्ट' का आयोजन हुआ। यह जगह सुविधायुक्त और नैसर्गिक सौंदर्य से भरपूर है। यूरोप और अन्य खंड के विविध देशों से महात्मा व मुमुक्षु इस इवेन्ट में हिस्सा लेने के लिए आए थे। लगभग 375 शिविरार्थि उपस्थित रहे। पूज्यश्री का स्वागत महात्माओं ने क्यू में खड़े रहकर किया। पहले दिन सुबह के सत्संग में पूज्यश्री ने स्थानीय महात्मा व मुमुक्षुओं को रोज़मर्रा के जीवन तथा अध्यात्म के बारे में उठते प्रश्नों के समाधानपूर्वक जवाब दिए। सुबह के सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में 125 मुमुक्षुओं ने आत्माज्ञान प्राप्त किया। 'वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी' 'गुरु-शिष्य' पुस्तकें और 'सिद्धस्तुती' पर 'दादावाणी' और बच्चों के लिए 'भगवान कहाँ रहते हैं?' जर्मन भाषा में अनुवादित पुस्तकों का पूज्यश्री द्वारा विमोचन किया गया। इवेन्ट में शिविरार्थियों के लिए दर्शन, भक्ति, गरबा, मूर्तियों की विधि वगैरह कार्यक्रम का आयोजन हुआ। अंग्रेजी पुस्तक 'साइन्स ऑफ कर्मा' पर दो दिन पारायण हुआ। पूज्यश्री ने कर्म की थ्योरी के बारे में, जर्मन महात्माओं के प्रश्नों के जवाब विविध उदारहरणों द्वारा अंग्रेजी में दिए।

इवेन्ट में आयोजित भक्ति कार्यक्रम में स्थानीय महात्माओं ने अडालज में मनाया गया JJ-111 में गाए हुए पद और उन्होंने बनाएँ हुए नए पद गाकर सब को भक्ति में लीन कर दिया। स्थानीय महात्माओं ने आप्तपुत्र द्वारा हुए सत्संग का लाभ उठाया और उन्होंने पूज्य नीरूमाँ और पूज्यश्री दीपकभाई के साथ हुए अपने अनुभव का वर्णन किया। महात्माओं ने पूज्यश्री के साथ वॉक और इन्फॉर्मल समय बिताने का लाभ प्राप्त किया।

3-4 अप्रैल : जर्मनी से यू.के. आगमन के समय मान्चेस्टर में पूज्यश्री का 150 स्थानीय महात्माओं ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। ओल्डहैम में बहुत समय के बाद पूज्यश्री के दो दिवसीय सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सुबह के सत्संग के बाद आयोजित ज्ञानविधि में 55 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान प्राप्त किया। पॉर्ट लैन्ड बेसिन म्यूज़ियम में पूज्यश्री के साथ महात्माओं ने इन्फॉर्मल समय बिताया।

5-7 अप्रैल : लेस्टर में पूज्यश्री के सत्संग व ज्ञानविधि कार्यक्रम का आयोजन हुआ। स्थानीय महात्माओं ने उत्साहपूर्वक पूज्यश्री का स्वागत किया। सत्संग में 400 महात्मा व मुमुक्षुओं की उपस्थिति रही। पूज्यश्री GNC के बच्चों द्वारा 'सिन्सियारिटी' टॉपिक पर बनाई गई प्रदर्शनी देखने गए। बच्चों ने 'सिन्सियारिटी' के बारे में लिखे हुए शब्दों वाले गुब्बारे हाथ में लेकर पूज्यश्री का स्वागत किया। पूज्यश्री ने मुमुक्षुओं द्वारा विविध विषयों पर पूछे गए प्रश्नों के समाधानकारी जवाब दिए। दिनांक 7 को आयोजित ज्ञानविधि में 56 मुमुक्षुओं ने आत्मज्ञान की प्राप्ति की। महात्माओं ने पूज्य श्री के साथ इन्फॉर्मल समय बिताया, जिसमें पिकनिक, गरबा, भाप (स्टीम) से चलती ट्रैन के हेरिटेज म्यूज़ियम देखने जैसे कार्यक्रम हुए। 'दादा दरबार' में पूज्यश्री से स्थानीय महात्माओं ने अपने प्रश्नों के लिए व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्राप्त किया। 120 महात्माओं ने इसका लाभ उठाया।

आत्मज्ञानी पूज्य नीरू माँ और पूज्य दीपकभाई के आशीर्वाद प्राप्त आप्तपुत्रों के सत्संग कार्यक्रम

पटना **दिनांक : 13 जुलाई** **समय :** सुबह 10 से 7 **संपर्क :** 7352723132
स्थल : महाराणा प्रताप भवन, आर्य कुमार रोड, दिनकर गोलंबर के पास, राजेन्द्र नगर, पटना.

वैशाली **दिनांक : 15 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9934852489
स्थल : शारदा सदन पुस्तकालय, लालगंज, वैशाली.

नवादा **दिनांक : 16 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 7654057901
स्थल : दुर्गा स्थान, बिजली ऑफिस के सामने, गया रोड, नवादा.

गया **दिनांक : 17 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9835623307
स्थल : संजय नगर(छोटकी नवादा), लेप्रोसी अस्तपताल के सामने गली में, गया.

बोकारो (चास) **दिनांक : 19 जुलाई** **समय :** दोपहर 3 से 5 **संपर्क :** 7765045788
स्थल : राम रूद्र हाई स्कूल, जोधाडीह मोड़, चास, बोकारो

हजारीबाग **दिनांक : 20 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 9798126101
स्थल : ओकनी, बड़ा शिव मंदिर के सामने, हज़ारीबाग सिटी, ज़िला-हज़ारीबाग.

राँची **दिनांक : 21 जुलाई** **समय :** शाम 4 से 6 **संपर्क :** 8092543226
स्थल : गेट नं 1 एंव 2, अशोकनगर देवालय एवं चिंतन स्थल, राँची.

उज्जैन	दि : 14-15 **जून**	**संपर्क :** 9425195647	**खरगोन**	दि : 20 **जून**	**संपर्क :** 9425643302
हैदराबाद	दि : 15-16 **जून**	**संपर्क :** 9885058771	**होशंगाबाद**	दि : 21 **जून**	**संपर्क :** 9406950640
विशाखापट्टनम	दि : 17 **जून**	**संपर्क :** 9010189689	**भोपाल**	दि : 22-23 **जून**	**संपर्क :** 9425190511
नेल्लौर	दि : 19-20 **जून**	**संपर्क :** 9441851277	**जबलपुर**	दि : 24-25 **जून**	**संपर्क :** 9425160428
इंदौर	दि : 16-17 **जून**	**संपर्क :** 6354602400	**दमोह**	दि : 26 **जून**	**संपर्क :** 9926985853
अंजड	दि : 18-19 **जून**	**संपर्क :** 9843652143	**ग्वालियर**	दि : 27-28 **जून**	**संपर्क :** 9926265406
			धनबाद	दि : 18 **जुलाई**	**संपर्क :** 9431191375

समय और स्थल की जानकारी के लिए उपर दिए गए नंबर पर संपर्क करे।

भारत में पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

भारत
- **'दूरदर्शन'-नेशनल** पर सोम से शनि सुबह 8-30 से 9, रवि सुबह 6-30 से 7
- **'दूरदर्शन'-मध्यप्रदेश** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4, रवि शाम 6 से 6-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-बिहार** पर हर रोज़ शाम 6-30 से 7, हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-उत्तरप्रदेश** पर सोम से शनि रात 9-30 से 10 (हिन्दी में)
- **'उड़ीसा प्लस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 7-30 से 8 (हिन्दी में)
- **'दूरदर्शन'-सह्याद्रि** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 (मराठी में)
- **'दूरदर्शन'-चंदना** पर सोम और शुक्र रात 7-30 से 8 (कन्नड़ में)
- **'दूरदर्शन' गुजरात - गिरनार** पर सोम से शनि दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)
- **'दूरदर्शन' गिरनार** पर हर रोज़ सुबह 9 से 9-30, रात 10 से 10-30 (गुजराती में)
- **'अरिहंत'** पर हर रोज़ सुबह 3-30 से 4-30 दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9 (गुजराती में)

USA-Canada
- **'Rishtey-USA'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
- **'TV Asia'** पर हर रोज, सुबह 7-30 से 8 EST (गुजराती में)

UK
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8 से 8-30 (हिन्दी में)
- **'Rishtey-UK'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 Western European Time (6am-6-30am GMT)
- **'वीनस' टीवी** पर हर रोज़ सुबह 8-30 से 9 (गुजराती में)

CAN-Fiji-NZ-Sing.-SA-UAE ✦ **Rishtey-Asia'** पर हर रोज़ सुबह 7 से 7-30 तथा 8 से 8-30 (हिन्दी में) EST
USA-UK-Africa-Aus. ✦ **'आस्था'** (डीश टीवी चेनल 849-युके, 719-युएसए) पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30

Pujya Deepakbhai's Canada-USA Satsang Schedule 2019

Contact no. for all centers in USA : 1-877-505-DADA (3232) & email for USA - info@us.dadabhagwan.org

Date	Day	City	Session Title	From	To	Venue	Contact No. & E-mail
21 Jun	Fri	Montreal, Canada	Aptaputra Satsang	7-00 PM	9-00 PM	Hampton Inn & Suites, 1900 Trans Canada Hwy, Dorval, Quebec, H9P 2N4	Extn. 1025 wcmontreal@ ca.dadabhagwan.org
21 Jun	Fri	Toronto, Canada	Mahatma Only Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Sringeri Vidya Bharati Foundation, 80 Brydon Dr., Etobicoke, ON, M9W 4N6	Extn. 1006 wctoronto@ ca.dadabhagwan.org
22 Jun	Sat		Satsang	5-00 PM	8-00 PM		
23 Jun	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
23 Jun	Sun		Gnan Vidhi	4-00 PM	8-00 PM		
30 Jun	Sun	Savannah, GA	Aptaputra Satsang	5-00 PM	7-00 PM	Savannah Sanatan Temple, 2006 Fort Argyle Road, Bloomingdale, GA 31302	Extn. 1038 atul@comcast.net
1 Jul	Mon	Tallahassee, FL	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Lawton Chiles High School - Auditorium, 7200 Lawton Chiles Lane, Tallahassee, FL 32312	Extn. 1037 wctallahasee@ us.dadabhagwan.org
2 Jul	Tue		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
2 Jul	Tue		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM		
8 Jul	Mon	Des Moines, IA	Satsang	6-30 PM	9-30 PM	Johnston Middle School - Auditorium, 6501 NW 62nd Avenue, Johnston, IA 50131	Extn. 1036 wciowa@ us.dadabhagwan.org
9 Jul	Tue		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
9 Jul	Tue		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM		
12 Jul	Fri	Houston, TX	Opening Ceremony & Satsang	10-00 AM	12-30 PM	Hilton Americas-Houston, 1600 Lamar Street, Houston, TX 77010	Extn. 10 gp@ us.dadabhagwan.org
12 Jul	Fri	Houston, TX	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
13 Jul	Sat	Houston, TX	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM		
13 Jul	Sat	Houston, TX	Gnan Vidhi	5-00 PM	7-30 PM		
14 Jul	Sun	Houston, TX	Shobha Yatra	8-00 AM	9-30 PM		
14 Jul	Sun	Houston, TX	Pran Pratishtha	10-00 AM	12-30 PM		
14 Jul	Sun	Houston, TX	GP Shibir	4-30 PM	7-00 PM		
15 Jul	Mon	Houston, TX	GP Shibir	10-00 AM	12-30 PM		
15 Jul	Mon	Houston, TX	Aptaputra Satsang	4-30 PM	7-00 PM		
16 Jul	Tue	Houston, TX	GP Day	8-00 AM	12-30 PM		
16 Jul	Tue	Houston, TX	GP Day	4-30 PM	7-00 PM		
17 Jul	Wed	Houston, TX	GP Shibir - Closing Ceremony	10-00 AM	11-30 PM		
20 Jul	Sat	Chicago, IL	Satsang	5-00 PM	8-00 PM	Sheraton Lisle Naperville, 3000 Warrenville Road, Lisle, IL 60532	Extn. 1005 wcchicago@ us.dadabhagwan.org
21 Jul	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
21 Jul	Sun		Gnan Vidhi	5-00 PM	9-00 PM		
22 Jul	Mon		Mahatma Only Satsang	6-00 PM	9-00 PM		
27 Jul	Sat	Los Angeles, CA	Satsang	5-00 PM	8-00 PM	Sanatan Dharma Temple, 15311 Pioneer Blvd. Los Angeles, CA 90650	Extn. 1009 wclosangeles@ us.dadabhagwan.org
28 Jul	Sun		Aptaputra Satsang	10-30 AM	12-30 PM		
28 Jul	Sun		Gnan Vidhi	4-30 PM	8-30 PM		

'दादावाणी' के वार्षिक सदस्यों के लिए सूचना

आपको आपकी दादावाणी पत्रिका की सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपको मिली इस महीने की दादावाणी पत्रिका के कवर पर लगे हुए लेबल पर ग्राहक नं. के बाद # हो तो यह आपकी अन्तिम दादावाणी पत्रिका है। उदा. DHIA12345#. दादावाणी पत्रिका रिन्यु कराने के लिए पेज नं. 3 पर दर्शाये गए मूल्य अनुसार मनी आर्डर या डिमान्ड ड्राफ्ट (पेयेबल अहमदाबाद) त्रिमंदिर अडालज के पते पर भेजें। साथ ही अपना नाम, पूरा पता (पिनकोड के साथ), फोन-मोबाइल नंबर, इ-मेल आदि आवश्यक जानकारी दें।

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

सुरत

18 मई (शनि) रात 8 से 11 – **सत्संग** तथा **19 मई** (रवि) शाम 5-30 से 9 – **ज्ञानविधि**

स्थल : इन्डोर स्टेडियम, लोर्डस कोन्वेन्ट स्कूल के सामने, मेघदूत सोसायटी के पास, अठवालाईन्स. **संपर्क :** 9574008007

20 मई (सोम) रात 8 से 11 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : गांधी स्मृति भवन, टीमलीयावाड रोड, महावीर होस्पीटल के पीछे, नानपुरा, सुरत. **संपर्क :** 9574008007

वडोदरा

27 मई (सोम) शाम 7-30 से 10-30 – **सत्संग** तथा **28 मई** (मंगल) शाम 7 से 10-30 – **ज्ञानविधि**

29 मई (बुध) शाम 7-30 से 10-30 – **आप्तपुत्र सत्संग**

स्थल : अकोटा स्टेडियम, अकोटा, वडोदरा. **संपर्क :** 9924343335

PMHT (पेरेन्ट्स महात्मा) शिविर

5 जून (बुध)	– सुबह 10-30 से 12	**सत्संग पारायण (पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार)**
5 जून (बुध)	– शाम 5 से 6-30	**अपेक्षा से टकराव**
6 जून (गुरु)	– शाम 5 से 7-30	**सत्संग पारायण (माता-पिता बच्चों का व्यवहार)**
7 जून (शुक्र)	– सुबह 10-30 से 12	**मा-बाप बनो लेकिन मा-बाप पना मत करो**
7 जून (शुक्र)	– शाम 5 से 6-30	**मा-बाप बनो लेकिन मा-बाप पना मत करो**
8 जून (शनि)	– सुबह 10 से 12-30	**सत्संग पारायण (पैसो का व्यवहार)**
9 जून (रवि)	– सुबह 10-30 से 12	**लक्ष्मी की जरुरत कितनी और कब तक?**
9 जून (रवि)	– शाम 5-30 से 7	**लक्ष्मी की जरुरत कितनी और कब तक?**

सूचना : 1) यह शिविर ज्ञान लिए हुए विवाहित महात्माओं के लिए ही रखी गई है। 2) पूज्यश्री दीपकभाई द्वारा गुजराती में सत्संग होगा तथा आप्तपुत्र भाईयों तथा आप्तपुत्री बहनों द्वारा ग्रुप सत्संग किए जाएँगे। हिन्दी भाषी महात्माओं के लिए रेडियो सेट के द्वारा हिन्दी में भाषांतर की सुविधा उपलब्ध होगी। भाग लेनेवाले महात्मा अपने साथ खुद का FM रेडियो और हेडफोन लेकर आए। अगर आपके मोबाइल में FMकी सुविधा है, तो सत्संग स्थल पर आपके मोबाइल पर ही सत्संग का हिन्दी भाषांतर सुन सकेंगे। 3) शिविर में भाग लेने के लिए रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है।

'दादावाणी' के सभी सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org इ-मेइल आइडी पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज : (079) 39830100, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **गोधरा :** 9723707738, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** (02822)297097, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा:** 9574001557, **जामनगर :** 9924343687 **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद:** (079) 27540408, **मुंबई:** 9323528901, **वडोदरा (दादा मंदिर)** : 9924343335, **दिल्ली:** 9810098564, **बैंगलूर:** 9590979099, **कोलकता:** 9830080820

यु.एस.ए.-केनेडा: +1 877-505-DADA (3232), **यु.के.:** +44 330-111-DADA (3232), **ऑस्ट्रेलिया:** +61 421127947

मई 2019
वर्ष-14 अंक-7
अखंड क्रमांक - 163

दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. GAMC - 1500/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
LPWP Licence No. PMG/HQ/38/2018-2020
Valid up to 31-12-2020
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

दखल नहीं हो तो सहज प्रयत्न से प्राप्त होता है

'व्यवस्थित' से बाहर कुछ हो सके ऐसा नहीं है। फिर भी हमें व्यवस्थित का ऐसा अर्थ नहीं निकालना चाहिए कि 'सोते रहो, सब हो जाएगा,' यदि व्यवस्थित कहना हो तो अपने प्रयत्न होने चाहिए। फिर भी व्यवस्थित जितने प्रयत्न करवाए उतने ही कर पाते हैं। लेकिन अपनी इच्छा क्या होनी चाहिए? प्रयत्न करने की। यदि हम सुबह दस बजे से ही वसूली के लिए जाने लगें और वह व्यक्ति नहीं मिला। फिर वापस बारह बजे गए, फिर भी नहीं मिला, तब फिर ऐसा नहीं कि घर आकर वापस डेढ़ बजे जाएँ। प्रयत्न यानी कि एक बार जाकर आ जाना। फिर वापस मत सोचना। ये तो कितने प्रयत्न करते हैं कि बार-बार जाते रहते हैं। प्रयत्न तो, सहज प्रयत्न होने चाहिए। हम जिसे ढूँढ रहे हों वह सामने से आ मिले। हमारे सभी प्रयत्न सहज होते हैं। सहज रूप से ही यों हिसाब से ही सब सेट है क्योंकि हमारा किसी प्रकार का दखल नहीं है न!

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Offset, B - 99, GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025.